सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अक्टूबर, 2021 वर्ष 20 अंक 08

खुदाया नबी पे हों लाखों सलाम

मुहम्मद नबी ख़ातमुल अंबिया
वह महबूबे रब अशरफुल अंबिया
खुदा ने दिया उनको कुरआने पाक
मुअ़जिज़ा है नबी का यह कुरआने पाक
नहीं कोई माबूद रब के सिवा
यह कलमा नबी से है हमको मिला
मुहम्मद नबी साहिबे मोजिज़ात
अलैहिस्सलामु अलैहिस्सलात
ख़ुदाया नबी पे हों लाखों सलाम
उनकी आल और अस्हाब पर भी सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
ज़िक्रे बिअ़सते नबीये अकरम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
आशावादी दृष्टिकोण और आत्मविश्वास	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
इस्लामिक अर्थव्यवस्था में सामंजस्य	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	14
दीन के नाम पर दुन्या कमाने वाले	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	17
इस्लाम में तालीम व तर्बियत	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	18
आखिरत की फिक्र कीजिए	मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी रह0	22
मुसलमानों के दो पवित्र और	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	26
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	28
ऐकता का संदेष्टा	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	30
सय्यिदे वुल्दे आदम हज़रत	हज़रत मौ0 मु0 अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0	34
उम्मुल मोमिनीन	मौलाना मुहम्मद तारिक़ नौमान	38
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अन्फ़ालः-

अनुवाद—

भला उनमें (ख़ूबी) क्या है कि वह उनको अज़ाब न दे जबकि वे मस्जिद—ए—हराम के लिए रुकावट बनते हैं जब कि वे उसके मुतवल्ली (व्यवस्थापक) भी नहीं उसके मुतवल्ली तो परहेज़गार लोग हो सकते हैं लेकिन उनमें अधिकतर लोग नहीं जानते(34) और काबा के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा और कुछ भी नहीं तो जो तुम इन्कार किया करते थे उसका मज़ा चखो[1](35) इन्कार करने वाले अपने मालों को इसलिए ख़र्च करते हैं कि अल्लाह के रास्ते का रोड़ा बनें, बस वे माल ख़र्च करते रहेंगे फिर वही (माल) उनके लिए पश्चाताप बन जाएंगे फिर वे पराजित हो कर रह जाएंगे और जिन्होंने कुफ़्र किया वे जहन्नम की ओर हांके जाएंगे(36) ताकि अल्लाह पाक और नापाक दोनों को अलग अलग कर दे और नापाक को एक दूसरे पर रख कर सबकी गठरी बना कर उसको दोज़ख़ में डाल दे, यही लोग नुकसान उठाने वाले हैं(37) इनकार करने वालों से कह दीजिए कि अगर वे बाज़ आ जाते तो जो कुछ हो चुका वह उनके लिए माफ़ किया जाता है और अगर फिर वही करेंगे तो (हमारा) मामला पहलों के साथ गुज़र ही चुका है[2](38) और उनसे लड़ते रहो यहां तक कि फितना न रहे और दीन सारे का सारा अल्लाह ही का हो जाए[3] फिर अगर वे बाज़ आजाएं तो अल्लाह उनके कामों को ख़ूब देखता है(39) और अगर वे न मानें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा हिमायती (समर्थक) है, क्या खूब हिमायती है और क्या ख़ूब मददगार है(40) और जान लो कि जो भी तुमने ग़नीमत का माल प्राप्त किया है उसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का है और उसके पैग़म्बर का और नातेदारों और अनाथों और निर्धनों का है और जो यात्रा पर हो[4] अगर तुम अल्लाह में और उस चीज़ में जो हमने अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारी थी जिस दिन दो सेनाएं आमने—सामने हुई थीं[5] और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखता है(41) जब तुम इस किनारे पर थे और वे उस किनारे पर और काफ़िला तुम से नीचे था[6] और अगर तुम आपस में पहले से तय करते तो वादे पर न पहुँचते लेकिन यह इसलिए हुआ कि अल्लाह उस चीज़ को पूरा कर दे जिस को होना ही था ताकि जिसे विनष्ट (हलाक़) होना है वह प्रमाण के साथ विनष्ट हो और जिसको ज़िन्दा रहना है वह प्रमाण के साथ ज़िन्दा रहे और बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है[7](42) और जब अल्लाह आपको सपने में उन्हें बहुत थोड़ा दिखा रहा था और अगर वह उनकी संख्या को अधिक दिखाता तो तुम लोग ज़रूर हिम्मत हार जाते और काम में झगड़ा डालते लेकिन

अल्लाह ने बचा लिया बेशक वह दिलों की हालत से ख़ूब वाकिफ़ है(43) और जब मुठभेड़ के समय वह उन लोगों को तुम्हारी निगाहों में कम दिखा रहा था और उनकी निगाहों में तुम्हें कम दिखा रहा था ताकि अल्लाह उस काम को कर ही डाले जिसे होना ही था और सब काम अल्लाह ही की ओर लौटते हैं[5](44) ऐ ईमान वालो! जब किसी फ़ौज से तुम्हारा सामना हो तो डट जाओ और अल्लाह को ख़ूब याद करो ताकि तुम सफल हो[9](45)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. असली नमाज़ियों को अल्लाह के घर (बैतुल्लहा) से रोकते हैं और खुद उनकी इबादत का हाल यह है कि नंगे बदन तवाफ़ (विशेष) शैली में काबा की परिक्रमा) करते हैं ज़िक्र (अल्लाह की याद) की जगह तालियाँ और सीटियाँ बजाते हैं, अज़ाब लाने वाला कौन काम है जो वे न करते हों बस कुछ मज़ा तो उनको बद्र युद्ध में चखाया गया और असली अज़ाब आख़िरत का है।

2. इस्लाम और मुसलमानों की दुश्मनी पर वे ख़र्च करते रहे हैं, बद्र के अवसर पर और उसके बाद भी जो व्यवसायिक काफिले का लाभ हुआ था सबने उस को इसी मक़सद के लिए रखा था कि इस्लाम के रास्ते में रोड़े अटकाएं, कल यही उनके लिए पछतावा होगा और वे अफ़सोस से अपने हाथ चबाएंगे, अल्लाह तआला इन्कार करने वालों को अलग करके सबकी गठरी बना कर दोज़ख़ में डाल देगा फिर जो उनमें बाज़ आ जाते है और मान लेते हैं उनके लिए माफ़ी है वरना न मानने वालों के साथ जो हुआ है उनके सामने है वही उनके साथ होगा।

3. जेहाद का पहला मकसद यह है कि आदेश केवल अल्लाह का चले, सच्चा धर्म सारे धर्मों के ऊपर हो। अरब प्रायद्वीप को अल्लाह ने इस्लाम का केन्द्र बनाया है इसलिए यहां का आदेश यही है कि कोई काफ़िर या मुश्रिक मुकम्मल तौर पर यहाँ नहीं रह सकता या इस्लाम लाये या कहीं और चला जाये इसलिए अरब प्रायद्वीप में काफ़िरों से उस समय तक जंग का आदेश दिया गया जब तक वे उन दो बातों में से कोई एक बात अपना न लें अलबत्ता अरब प्रायद्वीप के बाहर का आदेश इससे भिन्न है।

4. सूरह के शुरु में कहा था कि ग़नीमत का माल अल्लाह का है उसके पैग़म्बर का, यहाँ थोड़ा विस्तार से बताया जा रहा है कि जो ग़नीमत का माल काफ़िरों से लड़ कर हाथ आये उसका पाँचवाँ हिस्सा विशेष रूप से अल्लाह के लिए है जिसके प्रतिनिधि के रूप में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको पाँच जगहों पर ख़र्च कर सकते हैं, अपने ऊपर, अपने नातेदारों पर, अनाथों पर, निर्धनों पर और यात्रियों पर, शेष चार भाग जेहाद करने वालों पर ख़र्च किये जाएंगे।

5. यानी बद्र के दिन जिसको फैसले का दिन कहा गया और उस दिन अल्लाह ने खास मदद उतारी।

6. यानी मदीने की निकटवर्ती छोर पर तुम थे और दूर वाली छोर पर काफ़िरों की सेना थी और अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला समुद्र के किनारे–किनारे जा रहा था।

7. कुरैश अपने काफ़िले की मदद को आये और तुम काफ़िले पर हमला करने के

शेष पृष्ठ ...8..पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

खुशनसीब जन्नतीः—

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स सबके बाद दोज़ख से निकाला जायेगा और सबके बाद जन्नत में दाखिल होगा उसको मैं खूब जानता हूँ, वह शख्स ऐसा होगा! दोजख की तकलीफ़ों से चकना चूर हो कर घुटनों के बल चल कर दोजख से निकलेगा, फिर उससे अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमायेगा, जा जन्नत में दाखिल हो जा, वह जन्नत में जायेगा तो अपने ख्याल में उसको भरी हुई देख कर कहेगाः—

ख़ुदावन्द मैं इसमें कहां रहूँ, यह तो बिल्कुल भरी हुई है, अल्लाह तआला इरशाद फरमायेगा जन्नत में दाखिल हो जा, वह फिर जन्नत में जायेगा और उसको अपने ख्याल में भरी हुई देख कर वापस होगा और कहेगा ऐ अल्लाह मेरे जन्नत में रहने की गुंजाइश कहाँ वह तो बिल्कुल भरी है, अल्लाह तआला फरमायेगा जन्नत में दाखिल हो जा तुझ को दुन्या के बराबर बल्कि दस गुना और ज़ियादा जगह दी गयी, वह कहेगा, ऐ परवरदिगार तू बादशाह हो कर मुझ से मज़ाक़ करता है, रावी इब्ने मस्ऊद कहते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हाल को बयान कर के इस क़द्र हंसे कि आप के दाँत मुबारक खुल गये, और यह जन्नत का सबसे कम दर्जे का आदमी होगा। (बुखारी—मुस्लिम)

जन्नत के खेमेः—

हज़रत अबू मूसा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जन्नत में मोमिनों के लिए मोती के खेमे होंगे जो अन्दर से बिल्कुल ख़ोल होंगे, उनकी लम्बाई साठ साठ मील की होगी, उन खेमों में उसके घर वाले रहा करेंगे, और एक दूसरे को न देखेंगे।

जन्नत के दरख़्त (पेड़)ः—

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नत में एक दरख़्त है कि मोटा ताज़ा तेज़ क़दम घुड़सवार सौ वर्ष उस पर चले तो उसको खत्म न कर सके।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

एक सही रिवायत जो हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि वह घुड़सवार उसके साये में सौ वर्ष चलेगा फिर भी उसको पार न कर सकेगा।

जन्नत वालों के दर्जेः—

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नती अपने ऊपर के दर्जे वालों को ऐसा देखेंगे जैसे तुम आसमान के किनारे पर पूरब व पश्चिम के रौशन सितारों को देखते हो और यह फर्क़ उनके दर्जे के सबब से होगा, लोगों ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 यह बलन्द मर्तबे तो पैगम्बरों को हासिल होंगे, दूसरे भला उन मर्तबों को कहां पहुँचेंगे, आपने फरमाया क़सम है उस जाते पाक की जिसके क़ब्जे में मेरी जान है यह मर्तबा उनको मिलेगा जो अल्लाह पर ईमान लाये और पैगम्बरों को बरहक जाना।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

जन्नत का एक टुकड़ाः—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जन्नत में मात्र एक कमान की जगह उससे बेहतर है जिस पर सूरज निकलता है और डूबता है, (यानी दुन्या और दुन्या की सब चीज़ों से बेहतर है।)

(बुख़ारी—मुस्लिम)

जन्नत का बाज़ारः—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नत में एक बाज़ार होगा जन्नती लोग हर जुमे को उसमें जमा होंगे और उत्तर से एक हवा आयेगी जो उनके चेहरों और कपड़ों पर तरह तरह की खुशबू न्योछावर कर देगी जिससे उनका हुस्न जमाल और बढ़ जायेगा, उनकी खूबसूरती को चार चाँद लग जायेंगे और फिर जब वह अपने घरों को पलटेंगे तो घर वाले कहेंगे, अल्लाहु अकबर तुम बहुत हसीन हो कर आये हो, वह कहेंगे ख़ुदा की क़सम तुम भी ख़ूबसूरती में बेनजीर हो रही हो। (मुस्लिम)

जन्नत के दोस्त अहबाबः—

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जन्नती एक दूसरे को झरोकों से इस तरह देखेंगे जैसे तुम आसमान में सितारों को देखते हो। (बुखारी—मुस्लिम)

आँखों की ठंडकः—

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक मज्लिस में शरीक था, आपने जन्नत का पूरा पूरा हाल बयान फरमाया, आखिर में यह फरमाया कि उसमें वह चीज़ें हैं जो न किसी आँखे ने देखी और न किसी कान ने सुनी और न किसी आदमी के दिल में उसका खयाल तक आया, फिर आपने यह आयत शरीफ़ा पढ़ी—

अनुवादः— "उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं और अपने रब को डर और उम्मीदवारी से पुकारते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें खर्च करते हैं, तो कोई नहीं जानता जो उनके लिए छुपा रखी गई है आँखों की ठंडक। (बुखारी)

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा .....

लिए निकले, काफ़िला बच कर निकल गया और दो फ़ौज़ें एक मैदान के दो किनारों पर आ पड़ी, एक को दूसरे की ख़बर न थी, यह अल्लाह की नीति थी, तुम अगर जानबूझ कर जाते तो इस तरह समय से न पहुँचते और विजय के बाद काफ़िरों पर पैग़म्बर की सच्चाई खुल गई जो मरा वह भी सच्चा जान कर और जो जीता रहा वह भी सत्य को पहचान कर।

8. मात्र अल्लाह की कृपा थी कि काफ़िर मुसलमानों को थोड़े लगे, इससे उनकी हिम्मत बनी रही और शुरु में काफ़िरों को मुसलमान कम ही नज़र आ रहे थे और वास्तविकता भी यही थी लेकिन बाद में जब फ़रिश्तों की मदद आई तो मुसलमानों की सेना काफ़िरों को दो गुना नज़र आने लगी।

9. अल्लाह की याद से स्थिरता मिलती है।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ज़िक्रे बिअ़सते नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

तरजुमाः—

वाक़ई अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर एहसान किया जब कि उन्हीं में से उनमें एक ऐसा रसूल भेजा जो उन पर खुदा की आयतें तिलावत करता है और उनकी ज़िन्दगी को संवारता है और उनको किताब व दानाई की तालीम देता है और बेशक उस रसूल की तशरीफ आवरी से पहले ये लोग खुली गुमराही में मुब्तला थे।

(आले इमरानः 164)

हक़ीकतन अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर बड़ा एहसान फरमाया जब कि उन्हीं में से उनमें एक ऐसा अ़ज़ीमुश्शान पैग़म्बर भेजा कि वह उनको अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और वह उन लोगों को संवारते और सुधारते हैं और हर क़िस्म के बुरे और घटिया अख़लाक़ से पाक करते हैं और किताबे इलाही की तालीम देते हैं और फहम व दानिश की बातें सिखाते हैं और बेशक यह लोग आप की बिअ़सत और आप की तवज्जुहाते ख़ुसूसी से पहले कुफ़्र व शिर्क की खुली गुमराही में मुब्तला थे।

एहसान की अ़ज़मत तो इससे ज़ाहिर है कि खुद अल्लाह तआ़ला ने इस एहसान का इज़हार फरमाया और अल्लाह तआ़ला जिस एहसान का ज़िक्र फरमाये उसकी अ़ज़मत और बलन्दी का क्या ठिकाना है, मुसलमानों का ज़िक्र इसलिए किया कि इस एहसान की क़द्र करने वाले और इससे फाइदा उठाने वाले सिर्फ मुसलमान ही हैं वरना यह एहसान हज़रते हक़ का तमाम इंसानों पर बल्कि काइनात के हर एक चीज़ पर है। ''उन्हीं में से'' का यह मतलब है कि अरब में से या कुरैश में से या बनी हाशिम में से या बनी आदम में से मबऊ़स फरमाया। और वह ग़ैर ख़ानदान के नहीं ग़ैर मुल्की नहीं कोई जिन और फरिश्ता नहीं। कोई अ़जमी होता तो यूं कहते ''क़ौम अ़रबी और रसूल अ़जमी। ग़ैर ख़ानदान का होता तो यूँ कहते हमें इसकी चालचलन का पता नहीं। अगर कोई जिन या फरिश्ता होता तो ग़ैर जिन्स होने की वजह से मानूस न होते, फिर वह अगर कोई मोजिज़ा पेश करता तो उसके मोजिज़े को ख़ारिके आ़दत न समझते बल्कि यूं कहते कि फरिश्ते और जिन ग़ैर मामूली ताक़त के मालिक होते हैं इसलिए अलौकिक कार्य उनकी ख़ुसूसियत में से होंगे। फिर जिन को और फरिश्ते को और ग़ैर मुल्की को तुम से खास हमदर्दी न होती जैसा कि गैर मुल्कियों के मुतअल्लिक रोज़—रोज़ का मुशाहदा है। बहर हाल यह पैग़म्बर बशर हैं, हज़रत इब्राहीम अलै0 की औलाद में से हैं, अ़रबीयुन नस्ल है, कुरैशी हैं, हाशमी हैं, हर तरह देखा भाला है, उसके मुख़ालिफ भी उसकी तारीफ़ के पुल बाँधते हैं, फिर उसके काम भी सुन लो।

1. यह कि अल्लाह की आयतें तुम पर तिलावत करता है जिनको अहले ज़ुबान होने की वजह से तुम ख़ूब समझते हो और उन आयात में जाहिर व बातिन की जिस क़द्र इस्लाह का सामान है वह तुम जानते हो।

2. तज़्किया यानी कुफ़्र व शिर्क और जाहिलाना रुसूमात की गंदगियों से तुमको पाक और साफ़ करता है, तुम्हारे अख़्लाक़ को बनाता और

संवारता है और तुम्हारे अख़्लाक़ को सुधारता और हर क़िस्म की ख़राबी से पाक करता है।

3. किताबुल्लाह की तालीम यानी उसकी तफसीर सिखाता है, जो बात समझ में नहीं आती उसको समझाता है कोई शुब्हा पेश आ जाए तो उसका जवाब देता है और कुरआन की ह़क़ीक़ी मंशा को बताता है, जैसा कि एक ईसाई ने हज़रत मरियम का नाम उख़्ते हारून (हारून की बहन) सुन कर एक सहाबी पर ऐतिराज़ किया था कि हारून तो हज़रते मूसा के भाई का नाम था। तुम्हारे कुरआन ने मरियम के भाई का नाम हारून बताया है, इस पर वह सहाबी खामोश हो गये, और जब उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह संदेह पेश किया तो आपने बर्जस्ता फरमाया, यह कैसा संदेह है, क्या मुख़्तलिफ़ आदमियों का एक सा नाम नहीं होता? इसमें ऐतिराज़ की क्या बात है। हज़रत मूसा अलै0 के भाई का नाम भी हारून था और हज़रत मरियम के भाई का भी नाम हारून था

4. ''ह़िकमत व दानिश सिखाता है'' हो सकता है कि इससे नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा और आपकी सुन्नतें मुराद हों। और हो सकता है कि कुरआन के असरार व नुकात व बारीकियाँ मुराद हों या बाज़ हिकमतें और मसलिहतें मुराद हों। चुनांचि इस इल्म व अ़मल के पैकर ने चन्द दिन की सोहबत के असर से दुन्या भर की दरमान्दह क़ौम को कहां से कहां पहुंचा दिया और वही दुन्या की बलन्द व बाला क़ौम उस पैग़म्बर की मुक़द्दस तालीम से मुन्ह़रिफ हो कर किस क़दर पस्ती में जा रही है और यूरोप की तक़लीद में मुब्तला हो कर कहाँ पहुँच गयी है।

बहरहाल पहले टुकड़े में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़मत बयान फरमाई, फिर आपके चार काम बताये फिर आख़िर में फरमाया किसी शख़्स की ख़ूबियाँ और उसके वजूद की बरकत इस तरह मालूम हो सकती है कि उसकी तश्रीफ आवरी से पहले की और उसकी तश्रीफ आवरी के बाद की दोनों हालतों का मुवाज़ना करो ताकि तुम को मालूम हो सके कि उसकी तालीमात से कब्ल तुम क्या थे और उसकी तालीमात के बाद तुम क्या हो गये। उस वक़्त तुम कहाँ खड़े थे और अब कहाँ पहुँच गये हो, उस वक़्त तुम्हारी तहज़ीब की दुन्या में क्या क़ीमत थी और अब क्या भाव है, इसको मालूम करके अल्लाह तआला की उस नेअ़मत उस रह़मत और उस बरकत की क़द्र करो जिसको उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूरत दे कर और उस मजमूआ़ का नाम मुहम्मद रख कर तुम्हारे पास भेजा है। यही हज़रत इब्राहीम अलै0 की दुआ़ है और यही हज़रत ईसा अलै0 की बशारत है जो मुहम्मद के नाम से इस वक़्त दुन्या में मशहूर है।

''अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिहि सय्यिदिना मुह़म्मदिंव व बारिक व सल्लिम''।

और हमने जो ऊपर अ़र्ज़ किया था कि मुसलमानों की ख़ुसूसियत सिर्फ इस वजह से फरमाई कि मुसलमानों ने इस नेअ़मत की क़द्र की वरना आप की रहमत और आपकी रौशनी से काइनात का ज़र्रह–ज़र्रह मुस्तफीद और फैज़याब हो रहा है। यह इसलिए अ़र्ज़ किया कि सूरह अम्बिया में आपके मुतअल्लिक़ फरमाया है–

शेष पृष्ठ ...13..पर

आशावादी दृष्टिकोण और आत्मविश्वास को बढावा

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) –अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

मानव सभ्यता को इस्लाम की पाँचवीं देन यह है कि इससे पहले मानव जाति के अधिकतर लोग ईश्वर की दया दृष्टि से निराश और मनुष्य के शालीन स्वभाव की तरफ़ से बदगुमान थे। इस विशिष्ट मानसिक वातावरण के पैदा करने में कुछ पूरब के प्राचीन धर्मों तथा योरोप व मध्य एशिया को बिगाड़ने वाले ईसाई धर्म का बड़ा हाथ है।

भारत के प्राचीन धर्म 'आवागमन' को मानते थे जिसके होते हुए मनुष्य के संकल्प और उसकी स्वायत्तता की परिकल्पना ही समाप्त हो जाती है। 'आवागमन' के अनुसार हर व्यक्ति अपने पिछले कर्मों का फल भोगने के लिए बाध्य है और वह दानव बन जाता है। कभी चरने वाला या कोई तुच्छ पशु अथवा कोई अभागा पापी मनुष्य के रूप में जन्म लेता है।

ईसाई धर्म ने घोषणा की कि मनुष्य जन्मजात पापी है और हज़रत मसीह उसके पापों के प्रायश्चित के रूप में हैं। इस विश्वास ने दुन्या के लाखों करोड़ों सभ्य ईसाईयों को अपने बारे में भ्रम व निराशा में डाल दिया।

निराशा के इस वातावरण में मानवता के दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने भरपूर तरीक़े से स्पष्ट घोषणा की कि मानव स्वभाव एक कोरी पाटी है जिस पर कुछ लिखा नहीं होता और अब उस पर कोई मनमोहक चिन्ह बनाया अथवा कोई सुलेख लिखा जा सकता है। मनुष्य अपना जीवन अपने संकल्प से प्रारम्भ करता है। और अपने कर्म के अनुसार पुण्य व पाप और स्वर्ग व नर्क का अधिकारी बनता है। और वह किसी और के कर्म का उत्तरदायी नहीं। कुरआन कहता हैः–

अनुवादः– *''कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता और मनुष्य को केवल अपनी ही कमाई मिलेगी और यह कि मनुष्य का प्रयास बहुत जल्द देख लिया जायेगा, फिर उसे पूरा–पूरा बदला दिया जायेगा।''*

(सूरः नज्म 38–40)

इस घोषणा ने मनुष्यों को उसकी प्रकृति पर खोया हुआ विश्वास लौटा दिया और वह दृढ़संकल्प, उत्साह व लगन के साथ आगे बढ़ने लगा ताकि अपने भाग्य और मानवता के भविष्य को संवार सके।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने यह निश्चित कर दिया कि गुनाह और चूक मानव जीवन का एक अस्थायी और अन्तिम अन्तराल है जो मनुष्य से भूलवश और कभी शैतान के बहकाने से हो जाती है, और नेकी व भलाई, पापों की स्वीकारोक्ति और उन पर पछतावा उसका मूल स्वभाव है और यही मानवता का जौहर है। और ईश्वर का ध्यान, उसके लगन और गुनाहों के पुनः न करने का संकल्प, मनुष्य की शालीनता की दलील, और हज़रत आदम अलै0 की मीरास (धरोहर) है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने गुनहगारों के सामने तौबा का विशाल द्वार खोल दिया और लोगों को उसकी तरफ़ खुले

आम बुलाया। और तौबाः की श्रेष्ठता इतने विस्तार से बताया कि इसे दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि अपने धर्म के इस महान स्तम्भ को पुनर्जीवित किया। और इसी लिए आपके दूसरे नामों के साथ आपका एक नाम ''नबी–ए–तौबा'' भी है। आपने तौबा को पापों का प्रायश्चित ही नहीं बताया अपितु आपने तौबा को इतना ऊँचा उठाया कि वह उत्कृष्ट उपासना और थोड़े समय में ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने और सिद्धि प्राप्ति करने का आसान रास्ता बना दिया।

तौबा से मनुष्य ध्यान में आने वाले बड़े से बड़े गुनाह से भी पाक हो जाता है। कुरआन पापियों, ख़ताकारों, और मन व शैतान से हारे हुए लोगों को अल्लाह की पनाह (ईश्वर की शरण) में आने का आह्वान करता है वह अल्लाह की रहमत की ऐसी मनमोहक तस्वीर प्रस्तुत करता है जिससे आभास होता है कि ईश्वर केवल दयालु ही नहीं बल्कि तौबा करने वालों को प्रिय रखता है और उनकी मेहनत की क़दर करता है। कुरआन कहता हैः–

अनुवादः– *'' आप (मेरी तरफ़ से इनसे) कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जो अपने ऊपर ज्यादतियाँ कर चुके हो (अर्थात पाप किये हैं) अल्लाह की मेहरबानी से निराश मत हो, बेशक अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देगा। वह बड़ा बख्शने वाला बेहद मेहरबान है।''*

(सूरः जुमर–53)

और इससे भी बढ़ कर इस आयत में देखिए जिसे अल्लाह ''तायबीन'' (तौबा करने वाले) के शब्द से प्रारम्भ करता हैः–

अनुवादः– *''तौबा करने वाले, बन्दगी करने वाले, स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकू करने वाले, सज्दः करने वाले, नेक बातों का हुक्म करने वाले, और बुरी बातों से रोकते रहने वाले, और अल्लाह की हदों का ख्याल रखने वाले हैं, (ऐ पैग़म्बर!) ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।''*

(सूरः तौबा–112)

तौबाः करने वालों की गुनाहों से माफ़ी और उस पर इतमीनान का अनदाज़ा कुरआन में बयान किये गये उस उल्लेख से होता है जिसमें उन तीन सहाबियों के तौबः क़बूल होने का एलान किया जो 'तबूक' के ग़ज़वे (लड़ाई) में बिना किसी उचित कारण के बिछड़ गये और मदीना में रह गये थे। कुरआन पहले अल्लाह के रसूल सल्ल0 और उन मुहाजिरीन व अन्सार का उल्लेख करता है जो उस 'गज़वा' में शामिल थे, फिर इसके बाद ही उन तीन बिछड़ने वालों का उल्लेख करता है ताकि वह लोग केवल इतना महसूस न करें कि उनकी तौबः क़बूल हुई बल्कि वह अपमानित न महसूस करें और उनमें हीनता की भावना पैदा न होने पाये। और उन पर यह बात साफ़ हो जाये कि उनका वास्तविक स्थान मुहाजिरीन व अन्सार की पहली पंक्ति में है इसलिए लज्जा की कोई बात नहीं।

क्या कोई धर्म तौबा और प्रायश्चित करने वालों की दिलजोई व शान्तवना और उनका ग़म ग़लत करने का इससे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है? कुर्आन में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार आया हैः–

अनुवादः—*''अल्लाह ने बेशक नबी पर कृपा की और मुहाजिरीन व अन्सार पर रहमत की जिन्होंने संकट के समय नबी का साथ दिया बाद में जबकि इनमें से कुछ के दिल डगमगा चले थे, फिर उसी ने उन पर अपनी कृपा की। बेशक, अल्लाह उन सब पर बड़ा मेहरबान है और उन तीनों पर जिनका फैसला बाद के लिए छोड़ रखा था। यहां तक कि जब विशाल पृथ्वी भी उनके लिए तंग हो उठी और वह अपनी जान से भी तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह के सिवाय और कहीं पनाह नहीं (तो) फिर अल्लाह ने उनकी तौबा कबूल कर ली ताकि वे तौबा करते रहा करें। बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला, बड़ा मेहरबान है।''*

(सूरः तौबा 117—118)

फिर कुरआन ने एक सामान्य नियम के रूप में घोषणा की कि अल्लाह की मेहरबानी हर चीज़ से बड़ी है और वह उसके अभिशाप से बढ़ कर हैः—

अनुवादः—*'' और मेरी रहमत तो हर चीज़ पर फैली हुई है।'' (सूरः आराफ़—156)*

एक हदीस में आया हैः—

अनुवादः—*''मेरी रहमत को मेरे ग़ज़ब (अभिशाप) पर सबकत हासिल है।''*

(मुस्लिम)

कुरआन ने निराशा को कुफ्र व जेहालत (अज्ञानता) बताया और याकूब अलै0 की ज़बान से इसे बयान कियाः—

अनुवादः—*'' अल्लाह की रहमत से निराश तो बस काफ़िर ही लोग होते हैं।''*

(सूरः यूसुफ़—87)

और दूसरी जगह हज़रत इब्राहीम अलै0 का क़ौल नक़ल किया हैः—

अनुवादः—*''अपने रब (पालनहार) की रहमत से गुमराह लोग ही निराश होते हैं।'' (सूरः हिज्र—56)*

इस प्रकार अल्लाह के नबी सल्ल0 ने तौबा का खुला हुआ आह्वान करके और उसकी श्रेष्ठता बयान करके भयभीत मानवता को तसल्ली दी। इससे पहले मानवता निराशा के बोझ के तले कराह रही थी।

आपने मानवता को एक नया जीवन प्रदान किया और उसके ठंढ़े होते हुए ह्रदय में गरमाहट पैदा कर दी। उसके घावों पर फाया रखा और उसे धरती के गर्त से उठा कर सम्मान, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की चरम सीमा पर पहुंचा दिया।

❖❖❖

ज़िक्रे बिअ़सते नबीये .....

तरजुमाः— ''और आपको हमने तमाम जहानों के लिए रह़मत बना कर भेजा है।''

अब आगे फिर असल बहस की तरफ़ वापसी है, यह बातें तो बाज़ मुनासिबत से दर्मियान में आ गयी थीं जो कुर्आन की फसाहत व बलाग़त का इन्तिहाई कमाल है कि जो बात दर्मियान में आ जाये उसे अधूरा नहीं छोड़ता और फिर असल मज़मून को शुरु कर देता है।

(कश्फुर्रहमान से ग्रहित)

❖❖❖

इस्लामिक अर्थव्यवस्था में सामंजस्य की आवश्यकता

—हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

इस्लामी विचारधारा और वर्तमान पश्चिमी विचारधारा में अर्थशास्त्र के विषय में बड़ा अन्तर है, इस्लाम ने जीविका की आवश्यकता और उसके प्राप्त करने पर बड़ा ज़ोर दिया है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक ज़रूरतमन्द आया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके घर से प्याला मंगवा कर ज़रूरत पूरा करने के लिए प्याला नीलाम करके एक दिरहम दिया और दूसरे दिरहम में कुल्हाड़ी ख़रीद कर अपने मुबारक हाथ से दस्ता लगाया और कहा कि लकड़ी काटो और बेचो, और उससे काम चलाओ, इसी प्रकार हज के मौक़े पर एक सहाबी ने अर्ज़ किया अपनी सारी प्रापर्टी अल्लाह की राह में दे दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया, उन्होंने कहा आधी दे दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे भी मना फ़रमाया, उन्होंने कहा एक तिहाई दे दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया एक तिहाई भी बहुत है लेकिन कर सकते हो और देखो अपने बच्चों को बेसहारा छोड़ने के बजाये उनके लिए इन्तिज़ाम करके जाओ।

इन दो मिसालों (उदाहरणों) से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को यह सिद्धान्त दिया कि ज़रूरत के लिए जीविका की फ़िक्र ज़रूरी है, लेकिन पश्चिमी विचारधारा यह है कि जितना अधिक से अधिक मिल सके चाहे दूसरे का पेट काट कर मिले, इसकी कोशिश की जाये। इन्सान का पेट एक सीमा रखता है और दूसरे इन्सान भी हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान को अगर एक मैदान भर के सोना मिल जाये तो वह चाहेगा कि दूसरा मैदान भी भरके मिल जाये तो तीसरे की भी ख़्वाहिश, और फरमाया कि इन्सान का पेट मिट्टी ही भरेगी, और पश्चिमी अर्थव्यवस्था इसी इन्सान की मिसाल है, उसके नतीजे में कुछ बेइन्तिहा दौलतमन्द हो जाते हैं और कुछ लोग दो वक़्त के खाने के भी मुहताज हो जाते हैं, यह पूँजीवाद सिस्टम में होता है और कम्युनिस्ट अर्थव्यवस्था में तो ऐसा तरीक़ा इख़्तियार किया गया कि जीविका प्राप्ति की कोशिश अपने इख़्तियार में नहीं रही, और परिश्रम करने वाले को काम करने की भावना से वंचित कर दिया गया, इस्लाम में दोनों त्रुटियों से बचने का प्रबन्ध है, अतः इन दो पश्चिमी सिद्धान्तों से हट कर जो पद्धति इस्लामी शिक्षा के अनुकूल है उसको बुन्याद बना कर हमें स्कीम सोचनी है।

अल्लाह तआला ने इस्लाम में विशेष रूप से ज़कात का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है अगर उसका प्रयोग सही ढंग से हो तो कोई परेशानी की बात नहीं हो सकती, अगर ज़कात की व्यवस्था काफ़ी न होती तो अल्लाह तआला ''अलीम व ख़बीर'' ख़ूब जानने वाला और

बा ख़बर है। इससे अच्छा कोई प्रबन्ध करता, वह फ़रमाता है, ''और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में बढ़ोत्तरी हो, तो ख़ुदा के नज़दीक उसमें बढ़ोत्तरी नहीं होती और जो तुम ज़कात देते हो और उससे ख़ुदा की प्रसन्नता चाहते हो (तो वह बरकत का कारण है) ऐसे ही लोग (अपने माल को दो गुना और तीन गुना करने वाले हैं) सूरः रूम– 39, फिर सूद की जो निन्दा की गई है और उसको अल्लाह तआला से युद्ध करने की सूरत बताई गई है, उसकी सूरत साँप के समान है जिसको देख कर आदमी डर जाये और उससे भागे, न कि उसके क़रीब होने की कोशिश करे और उसके चिकने चिकने शरीर पर हाथ फेरे।

इस्लाम एक व्यापी धर्म है उसमें ज़िन्दगी के सारे पहलुओं को समेटा गया है, केवल अक़ीदा और इबादत ही तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि उससे उन पहलुओं की भी रक्षा की गई है जो इन्सान की प्राकृतिक जाएज़ ज़रूरतों से सम्बन्ध रखते हैं, और उनका अर्थशास्त्र से भी विशेष सम्बन्ध है, इसलिए इसकी फ़िक्र करना इस्लाम में जायज़ ही नहीं बल्कि बाज़ मौक़ों पर ज़रूरी क़रार दी गई है, लेकिन इस्लाम की व्यापकता के साथ इसमें मुनासिब लिहाज़ रखने को बताया कि कौन चीज़ कितनी ज़ियादा ज़रूरी है और कौन चीज़ कम ज़रूरी है, इसको इस मिसाल से भी समझा जा सकता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमे का ख़ुतबा दे रहे थे तभी एक बड़ा तिजारती कारवां आया और कारोबार से सम्बन्धित लोग उसकी ओर आकृष्ट हो कर उस ओर जाने लगे, उस पर अल्लाह की ओर से पकड़ हुई कि अल्लाह की इबादत की ओर बुलाया जा रहा है, उसको छोड़ कर तत्कालीन माली लाभ की ओर ध्यान दिया जाने लगा, इस पर चेतावनी हुई लेकिन इसी के साथ यह भी कहा गया कि तुम नमाज़ अदा कर लो और फिर जाओ और अपनी जीविका प्राप्त करने में लगो, यह नहीं कहा गया कि हर हाल में केवल एक ही ओर सीमित रहो ''मोमिनो! जब जुमे के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाये तो ख़ुदा की याद (नमाज़) के लिए जल्दी करो और क्रय विक्रय छोड़ दो, अगर तुम इल्म व समझ रखते हो तो यह बात तुम्हारे पक्ष में उचित है, फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और खुदा का फ़ज़्ल तलाश करो''। (सूरः जुमा–10)

अल्लाह ने क्रमानुसार बता दिया किस की अहमियत कितनी है लिहाज़ा हमको दोनों की फ़िक्र करनी है।

दूसरी मिसाल हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की है, वह बड़े ताजिर और कारोबारी थे, जब वह ख़लीफ़ा हुए तो अपने कारोबार के लिए चले, हज़रत उमर रज़ि0 ने टोका कि उम्मत के कामों की व्यवस्था और प्रबन्ध कैसे होंगे? उन्होंने कहा कि अपनी अर्थव्यवस्था को क्या करें? हज़रत उमर ने फ़रमायाः– इसका मुआविज़ा हुकूमत से लीजिए, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 शासन व्यवस्था के

महत्व के पेशे नज़र राज़ी हो गये, वह चाहते तो अपने स्तर के अनुकूल मुआवज़ा लेते, सरबराह थे, उसी के अनुसार मुआवज़ा ले सकते थे, लेकिन उन्होंने इतना मुआवज़ा स्वीकार किया जिसमें बड़ी ही तंगी के साथ ज़िन्दगी गुज़र सकती थी, और इसमें अख़ीर तक सख़्त रवय्या रखा जिसका ज़िक्र इतिहास में आता है।

लिहाज़ा प्रश्न तरतीब (क्रम) का है, ज़रूरत हर पहलू की है लेकिन उसमें प्राथमिकता का लिहाज़ करना पड़ेगा, इसमें इस्लाम और पश्चिमी दृष्टिकोण का टकराव है, लिहाज़ा हमें इस्लामी दृष्टिकोण से देखना है, पश्चिम ने दौलत बढ़ाने को प्राथमिकता दी है और इसमें लोभ लोलुपता को बुन्याद बनाया है, और इस्लाम ने प्राथमिका ज़रूरत को दी है और इन्सानी सहानुभूति और सबकी शुभचिन्ता को प्राथमिकता दी है, इसी लिए ज़कात की व्यवस्था की है। पश्चिमी प्रबंध में बैंकों को असाधारण महत्व दिया गया है, जिसका ख़राब परिणाम तत्काल तो नहीं निकलता, लेकिन बाद में उसका नुक़सान सामने आता है, जैसा कि अजकल अचानक दुन्या में इस समय घटित हो रहा है, लिहाज़ा हमको ऐसी राह तलाश करनी है जिसका अच्छा पहलू हासिल हो और बुरे पहलू से बच सकें, दीनी मदरसों का वास्तविक महत्व उनकी दीनी विशेषता है, इसके लिए हम को उस सिद्धान्त को मार्ग दर्शक बनाना है जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमाज़ जुमा के सिलसिले में हमारे सामने मार्गदर्शन के रूप में रखा गया है।

इस सिलसिले में इस्लामी सिद्धांत को बुन्याद बना कर चिन्तन करना चाहिए कि इस्लामी अर्थव्यवस्था नये हालात और नये तक़ाज़ों को सामने रखते हुए किस प्रकार मुरत्तब (सम्पादित) किया जाये, अर्थशास्त्र जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है इसे नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता, लेकिन ग़ैरों के कार्यप्रणाली के प्रभाव से अपने को बचाते हुए इस्लामी सिद्धान्त के अन्तर्गत समाधान ढूँढना चाहिए, इसके लिए हमारे मुस्लिम कालिजों और यूनिवर्सिटियों में जहां रिसर्च के अच्छे इन्तिज़ामात हैं पश्चिमी अर्थव्यवस्था के भंवर से निकलने के लिए रिसर्च और चिन्तन मनन का प्रबंध करना चाहिए जो अब तक न हो सका, दसयों बीसियों साल से पश्चिमी विचार पद्धति की नक़ल हो रही है, हमारे दीनी मदरसों में भी आवश्यकतानुसार अर्थशास्त्र का परिचय और उसमें इस्लामी दृष्टिकोण की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए, हमारे नदवे में तो पहले ही से अर्थशास्त्र बल्कि राजनीति का परिचय पूर्ण रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित है, चुनांचि मैंने अपने विद्यार्थी काल में नदवे में अर्थशास्त्र उस किताब द्वारा पढ़ा जो हैद्राबाद की उस्मानिया यूनिवर्सिटी के इण्टर मीडिएट के कोर्स में शामिल थी, वह हमारे यहां भी कोर्स में थी, फिर व्यक्तिगत तौर पर बी0ए0 की भी किताब पढ़ी थी।

शेष पृष्ठ ...37..पर

दीन के नाम पर दुन्या कमाने वाले

—मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया आखरी ज़माने में कुछ ऐसे (मक्कार) लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुन्या का शिकार करेंगे, वह लोगों पर अपनी दरवेशी (बुगुर्जी) जाहिर करने और लोगों को मुतअस्सिर करने के लिए भेड़ों की खाल का लिबास पहनेंगे, उनकी ज़बानें शहद से ज़ियादा मीठी होंगी, और दिल भेड़ियों के से होंगे, (इनके बारे में) अल्लाह तआला का फरमान है ''यह लोग (मेरे ढील देने और फौरी पकड़ न करने से) धोका खा रहे हैं या (मुझ से निडर हो कर) मेरे मुक़ाबले में साहस कर रहे हैं, मुझे अपनी क़सम है कि मैं उन (मक्कारों) पर उन्हीं में से एक ऐसा फितना खड़ा करूंगा, जो उनमें के अक़्लमंदों और समझदार लोगों को भी हैरान व परेशान बना के छोड़ेगा। (तिर्मिजी)

ऊपर अल्लेखित हदीस से मालूम होता है कि आखरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुन्या का काम करेंगे, वह उस दीन के द्वारा दुन्या कमायेंगे, और संभवतः आज यह दौर आ गया है, क्योंकि अब इसकी इतनी ज़ियादा शक्लें सामने आ रही हैं कि ऐसा मालूम होता है कि अब दीन इस वक़्त दुन्या कमाने के लिए ही रह गया है, क्योंकि लोगों ने दीन को, दीनी कामों को, दीनी सेन्टर्स को और दीन के दूसरे भागों को दुन्या कमाने का जरीआ बना लिया है, और दीन के जरीया दुन्या कमाने का मतलब यह है कि लोगों को यह एहसास कराया जाय कि वह दीन का काम करते हैं लेकिन उसकी आड़ में रह कर दुन्या को हासिल किया जाय, हालांकि इस्लाम में पैसे कमाना मना नहीं है, बल्कि पैसे कमाना बहुत ज़रूरी है, लेकिन यह चीज़ इस्लाम में बिल्कुल मुनासिब नहीं कि कोई इन्सान दुन्या हासिल करने के लिए दीनी भेस बना कर उसकी आड़ में दुन्या कमाये जैसे कोई इन्सान अपने लोगों के दिलों में महब्बत व आस्था पैदा करे, और लोगों के सामने इस तरह रहे कि बहुत बड़ा बुज़ुर्ग समझा जाये, दीनी काम करने वाला समझा जाये, लोग उसका हाथ चूमें, लोग उसको हद्या पेश करें, और उसकी बात मानें, उसके बताये हुए रास्ते पर चलें, वह जो मशवरा दे उसको लोग मानें और उस पर अमल करें, यह सब वह चीज़ें हैं जिन रास्तों से आज कल के हज़रात दुन्या को हासिल करने में लगे हुए हैं।

इसीलिए ऊपर की हदीस में फरमाया गया है कि आखरी दौर में ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन का बहाना बनायेंगे लेकिन उसके द्वारा दुन्या कमायेंगे और यही नहीं फरमाया बल्कि कहा कि लोगों को दिखाने के लिए, और अपनी बड़ाई लोगों के दिलों में बिठाने के लिए और अपनी बुजुर्गी का लोहा मनवाने के लिए ऐसे लोग बड़ी—बड़ी बातें करेंगे हलाँकि दीन से उसका बिल्कुल सम्बन्ध न होगा, न दीन की उन पर छाप होगी, न ही दीन की ओर उनका दिल मायल होगा, उनके दिल सख़्त होंगे, जबानें शहद से ज़ियादा मीठी होंगी, किसी का कोई ख्याल नहीं होगा, चाहे कोई तबाह हो, या कोई भटक जाये, या कोई परेशान हाल हो जाये, कोई कहीं भी जाये, बस हमारा काम बन जाये।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

इस्लाम में तालीम व तर्बियत का मकाम

–मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

इस्लाम ने इल्म और तालीम व तर्बियत के तमाम गोशों और उसके शोबों को एक निहायत पुख़्ता बुन्याद का दर्जा अता किया है और उसी पर इस्लामी ज़िन्दगी की इमारत तामीर होती है, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे पहली ''वही'' में जिस बात का हुक्म दिया गया वह पढ़ने का हुक्म था, इसके बावजूद कि आप उम्मी थे जिसकी सराहत अल्लाह तआ़ला ने सूरा जुमा की उस आयत में फरमा दी है– (वही है जिसने अनपढ़ लोगों में, उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनको पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है यक़ीनन यह उससे पहले खुली गुमराही में थे)।

और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गारे हिरा में इबादत गुज़ारी में मश्गूल थे, जिब्राईल अमीन आपके पास आये और आप से पढ़ने की फ़रमाईश की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं पढ़ना नहीं जानता, फिर उन्होंने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सीने से लगा कर पूरी ताक़त से दबाया फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़िए, मैंने कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता फिर उन्होंने दोबारा मुझे पूरी ताक़त से सीने से लगाया, फिर छोड़ दिया, फिर कहा पढ़िए, मैंने कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता, उन्होंने तीसरी बार यही अमल किया, और कहा कि पढ़िए अपने उस रब के नाम से जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया, पढ़िए, आपका रब बड़ा करम वाला है जिसने कलम के ज़रीआ तालीम दी, जिसने इन्सान को वह सिखाया, जिसे वह नहीं जानता।

यही वह हिदायत याब पढ़ता था जिस का हुक्म नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिया गया और यही पढ़ना इल्म का वह अज़ीम सर चश्मा बना, जो ज़िन्दगी और कायनात के तमाम पहलुओं पर हावी है और तमाम उलूम की बुन्याद है, इसी के ज़रीआ अल्लाह की ज़ात तक पहुँचना और ज़िन्दगी की तमाम सर गर्मियों में उनसे तअल्लुक़ पैदा करना और इन्सान के काँधे पर जो ज़िम्मेदारियाँ रखी गईं हैं उनको अदा करने का रास्ता अमल और क़यादत के मैदान में हमवार होता है, आलमे इस्लामी और मुस्लिम अक़लियतों के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मौजूद तमाम मदारिस व जामियात के लिए माहिरीने तालीम ने जो निसाबे तालीम व तर्बियत वज़ा किया था वह उसी साफ सुथरी और मज़बूत बुन्याद पर क़ायम है, इस की वजह यह है कि मदरसा अपनी ज़ात के एतिबार से बजाए ख़ुद छोटा मोटा मुआ़शरा है, जैसा कि अ़तीया मुहम्मद अल इबराशी ने अपनी किताब फ़लसफ़ा तालीम व तर्बियत में मदरसा की अहमीयत उजागर करते हुए लिखा है–

–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

''मदरसा से बेहतर तलबा की सामूहिक तर्बियत का कोई दूसरा ज़रीआ नहीं हो सकता, मदरसे की ज़िन्दगी वह सच्ची ज़िन्दगी है जो सोसाईटी को एक बनाती है और व्यक्ति को सोसाइटी का मुफ़ीद उन्सुर बनाता है, ख़्वाह तबक़ात और माहौल का कितना और कैसा ही इख़्तिलाफ़ क्यों न हो''।

वह लिखते हैं ''मदरसे की ज़िन्दगी हर रोज़ तलबा को ऐसे वसायल फराहम करती है कि वह इज्तिमाई ख़ूबियों और तक़ाज़ों से वाकिफ़ हों, उन्हीं ख़ूबियों का अख़्लाक़ और हुस्न मुआमलात पर गहरा असर पड़ता है, अपनी आदात व ख़साइल के एतिबार से तलबा हमेशा उसके मुहताज रहते हैं कि उनकी बाक़ायदा निगहदाश्त और निगहबानी की जाय''।

इस मक़सद को व्यापक और आसान बनाने के लिए जिन किताबों और लाज़िमी मज़ामीन का इंतिख़ाब मुस्लिम माहिरीन तालीम की जानिब से अमल में आया, वह इस्लामी पहचान की तामीर की ज़मानत देता है और उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद को आलमे बशरी की क़यादत व हिदायत की ज़िम्मेदारी के लिए तैयार करता है, चुनांचे किता–बुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस निसाब की तश्कील में बुन्यादी किरदार है, और उसमें किसी कमी और ज़ियादती की गुंजाइश नहीं, चाहे सियासी व समाजी मसालेह उसमें रद्दो बदल चाहते हों।

निसाबी मज़ामीन में तब्दीली से मुतअल्लिक़ मौजूदा हक़ाइक़ इस बात के शाहिद हैं कि अब नई बुन्यादों पर एतिमाद करके इस्लामी जगत के तालीमी मरकज़ों में उसको व्यवहार में लाया जा रहा है, और नया निसाबे तालीम वज़ा करने के लिए जो कमेटियाँ बनाई गई हैं वह सब इस बात पर मुत्तफिक़ हैं कि किताब व सुन्नत से उन तमाम आयतों और इबारतों को निकाल दिया जाये, जिनका तअल्लुक़ यहूद व नसारा और जिहाद की अहमीयत और उसके फज़ाइल से है, इसी तरह जिन आयतों और इबारतों में बागी जमातों और मुश्रिकीन के ख़िलाफ जंग करने की दावत दी गई है, उनको प्रतिबन्धित कर दिया जाये और जिन बातों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद की हिम्मत अफ़्जाई होती हो उनको नज़रअन्दाज़ किया जाए, और जहां कहीं मुसलमानों की ज़िन्दगी में अख़्लाक़ी बलन्दी और उसके क्षेत्रफल को फैलाने का ज़िक्र हो, जिस से ज़िन्दगी के तमाम मुआमलात में इस्लाम की अमली नुमाइन्दगी का सबूत मिलता हो, उनको निसाब के मज़ामीन से पूरी तरह ख़ारिज कर दिया जाये, निसाबी तब्दीली के इस काम को ध्यान देने योग्य समझना और उस पर इत्मीनान का इज़हार करना ईमानी अक़ायद से पीछे हट जाने के मुरादिफ़ है, और इसका मतलब यह है कि एक मस्लहत पसंदाना सियासी इस्लाम को रवाज दिया जाय, जिसमें ज़माना और हालात के साथ–साथ चलने की दावत दी जाती हो, इस मौक़े पर इस्लामी तारीख़ के शुरुआती दौर का

वाक़िआ़ हमारी नज़रों के सामने फिर जाता है कि जब मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों की तादाद हाथ की उँगलियों से ज़ियादा नहीं थी, उन पर हर तरह से जुल्म व जियादती की बारिश हो रही थी और वह ज़ालिमों के रहम व करम पर ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, लेकिन उनको यक़ीन था कि जिस इस्लाम को उन्होंने इख़्तियार किया है, वह कभी उनको रुसवा नहीं करेगा और अल्लाह की तरफ़ से मदद आ कर रहेगी, इसके बावजूद जिन हालात ने उनको घेर रखा था वह आख़िरी दर्जा के जुल्म व क़सावत तक पहुंच गये थे, और दावत की मस्लहत का तक़ाज़ा यह था कि फिलहाल मुसलमान कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दावत न दें, और उनके तमाम मुश्रिकाना अंदाज़ को ख़ामोशी के साथ देखते रहें और अल्लाह तआ़ला से नजात और रहम की दरख़्वास्त करते रहें, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया कि वह तौहीद की दावत पर कभी ख़ामोशी इख़्तियार न करें, और शिर्क व बुतपरस्ती को अंजाम की परवाह किये बग़ैर अस्वीकृत करते रहें, हालांकि शिर्क और बुत परस्ती के दाई हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके मानने वालों पर हर तरह के जुल्म व ज़ियादती जारी रखने पर तुले हुए थे, इसी दौरान ''वही'' नाज़िल होती है और हुक्म दिया जाता है कि कुफ़्फ़ार को मुख़ातिब करके साफ़ साफ़ और निहायत ताकीद के साथ यह बता दिया जाय कि वह बुतों की इबादत कभी नहीं करेंगे, और सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करेंगे, सूरा काफ़िरून नाज़िल हुई और उस ने बुत परस्त और बुत परस्ती की दावत देने वालों को चैलेंज करते हुए निहायत सराहत के साथ ऐलान किया कि मुसलमानों का दीन उनके दीन की तरह नहीं है, जिसको उन्होंने ख़ुद से दीन समझ लिया है, इस वक़्त आप सूरा काफ़िरून की तिलावत करें और उसके मफहूम व माने को बगौर समझने की कोशिश करें–

(कह दीजिए कि ऐ काफिरो! न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम इबादत करते हो, न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ और न मैं इबादत करूँगा जिसकी तुम इबादत करते हो और न तुम उसकी इबादत करने वालो हो जिसकी मैं इबादत कर रहा हूँ, तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है)।

तन्हा यही आयतें अल्लाह तआ़ला के दीने इस्लाम से किसी हद तक भी दस्तबरदार होने का एलान नहीं करतीं, बल्कि किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों, किसी फर्द और जमाअत को जो अहले ईमान और सहीह अक़ीदा रखने वाले हों इस बात की इजाज़त नहीं देते कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले में किसी किस्म का इख़्तियार इस्तेमाल करें, इसलिए कि हालात उसके मुतक़ाज़ी हैं, यह हक़ीक़त है कि

किसी को अल्लाह के फैसले में तसर्रुफ़ करने का हक़ हासिल नहीं है, बल्कि क़ायदा कुल्लिया यह है कि इस्लाम के हर हुक्म को बे ख़ौफ़ व ख़तर तस्लीम किया जाये, और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के तमाम मुआमलात की ताबेदारी पूरे तौर पर इख़्तियार की जाए, इससे अंदाज़ा किया जा सकता है कि जब एक ईमानदार अपनी ज़िन्दगी और मुआशरा के तमाम मुआमलात में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम के सामने सर झुकाये हुए हैं, और उसमें उसको किसी तसर्रुफ का इख़्तियार नहीं है, तो ईमान व अक़ीदा के मुआमलात में दस्तबरदार होना और उसमें किसी किस्म की कमी व ज़ियादती करना किस तरह मुम्किन है।

आज इस्लामी मुल्कों के मदारिस व जामियात के निसाबे तालीम में एक महसूस तब्दीली का मुतालबा किया जा रहा है, और किताब व सुन्नत की आयतों और इबारतों में फेर बदल करने का हक़ दिया जा रहा है, और मगरिबी नई हिदायात की रौशनी में निसाबे तालीम व तर्बियत तैयार करने का हुक्म दिया जा रहा है मगर यह मुतालबा इस्लाम की बुन्यादी तालीमात से किसी हाल में मेल नहीं खाता है और सच्ची बात तो यह है कि अस्ल बुन्याद से दस्तबरदार होने का मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं है कि इस्लामी तहजीब की इमारत सतह ज़मीन पर काइम है, और उसकी कोई मज़बूत बुन्याद नहीं है और किसी भी मामूली वाक़िआ से मुतअस्सिर हो कर वह रुए ज़मीन पर ढेर हो सकती है।

दीन के मुआमलात में किसी भी दस्तबरदारी का सर चश्मा ईमान की कमज़ोरी की अलामत है या अक़ीदा को पामाल करने के मुरादिफ़ है, इसका मतलब सिर्फ यह है कि जिस अमानत को अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया था, और उन्होंने उसका भार उठाने से इनकार किया था, उस अमानत की ज़िम्मेदारी को इन्सान ने क़बूल किया था लेकिन अब वह इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने से इन्कार कर रहा है, हालांकि अक़ीदा के मुतालबात को नज़र अन्दाज़ करने और मस्लहत को पेशे नज़र रखने से कुर्आन करीम से बहुत सी सूरतों और आयतों को हज़्फ़ करने और किताब व सुन्नत के अहकाम व अवामिर से नज़र फेर लेने का रास्ता हमवार होता है, और इस बात का जवाज़ फराहम होता है कि कुर्आन करीम और हदीस शरीफ के मुख़्तसर एडीशन तैयार कर के पेश कर दिया जाय, ताकि उनको इस्लामी और गैर इस्लामी समाज के दरमियान पहुँचाना आसान हो, और मुकम्मल इस्लाम लोगों के घरों और उनकी ज़िन्दगियों से ग़ायब हो जाए, हालाँकि अल्लाह तआला ईमान वालों को हुक्म देते हैं और फरमाते हैं: (ऐ ईमान वालो! इस्लाम में सारे के सारे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के कदमों की पैरवी न करो, क्योंकि वह तुम्हारा सरीह दुश्मन है)। (सूरः बक़रा–208)

आख़िरत की फ़िक्र कीजिए

—मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी रह0

हदीस शरीफ में आता है कि क़यामत में किसी बन्दे के क़दम उस वक़्त तक अपनी जगह से हट न सकेंगे जब तक उससे चार बातों का जवाब न तलब कर लिया जाय (उन चार बातों में से एक यह है) माल कहाँ से हासिल किया और कहां खर्च किया? माल खुदा का एक अ़जीम इन्आम और एक ऐसी क़ीमती नेमत है जिससे दुन्या व आखिरत के ढेर सारे काम होते हैं, उसका शुक्र अदा करना चाहिए और शुक्र यह है कि उसको सही खर्च करने की जगह में खर्च किया जाये और सही तरीक़े से लिया जाये, यह है उसकी सही कद्र—कीमत, माल के कमाने और खर्च करने में बे एहतियाती माल की बड़ी नाक़द्री और खुदा की नेमत की बड़ी नाशुक्री है, जो लोग गलत रास्तों से माल हासिल करते हैं, या हराम तरीक़े से रूपया कमाते हैं, वह खुदा के नाशुक्रगुजार और खुदा बेज़ार (असन्तुष्ट) बन्दे होते हैं और फिर ऐसे माल का नतीजा भी अक्सर खराब होता है। बल्कि ऐसा माल बाज़ मरतबा वबाले जान बन जाता है, इसलिए ज़रूरी है कि मुसलमान मर्द और औरत कमाते और खर्च करते वक़्त इसको ज़रूर सोच लें कि यह माल किस तरीक़े से आ रहा है और किस रास्ते से जा रहा है?

सारे लोग ही जानते हैं कि नाजायज़ तरीक़े क्या हैं? यूं समझिये कि चोरी का माल, लूट का माल, रिश्वत का माल, सूदी माल, झूठ बोल कर या मिलावट करके, नाप तौल में कमी करके कमाया हुआ माल, ज़कात के पात्रों के नाम से ज़कात, सदक़ा, फित्रा, कुर्बानी की खाल वगैरा की रक़म हासिल करके अपने खर्च में लाना, जाली पीर फक़ीर बन कर जाहिलों और मूर्खों को लूटना, उनके अक़ीदों और ईमान को बर्बाद करना, झूठी गवाही देना या दिला कर रूपया वसूल करना, धोका और फरेब दे कर कब्जा किया हुआ माल नाजायज़ और हराम है ऐसे माल में ऐसे कारोबार में, ऐसी जायदाद में न कोई बरकत होती है ना खुदा की रहमत नाजिल होती है, यह माल एक साया है अभी आया अभी गया, इस दुन्या में चाहे यह साथ दे दे लेकिन आखिरत में वबाले जान बन कर रहता है। और सच्ची बात तो यह है कि इस तरह के मालदार लोग दुन्या में भी खराब नतीजा रखते हैं।

इसी तरीक़े से इस पर भी नज़र रखनी चाहिए कि माल कहाँ खर्च हो रहा है? ऐसा अक्सर होता है कि माल तो सही रास्ते से हासिल किया गया मगर खर्च गलत जगह हुआ या नाजायज काम किया गया, और उसमें वह माल खर्च किया गया जैसे अपव्यय, गलत रुसूम रिवाज, रिश्वत देना या माल से गलत काम करना, यह तरीक़ा भी हलाक करने वाला और ईमान के लिए ज़हर है, इस तरह खर्च करने से दुन्या व आखिरत दोनों बर्बाद होती है।

❖❖❖

मुसलमानों के दो पवित्र और सम्माननीय स्थान

—मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मक्का मुअज्ज़मा एवं मदीना मुनव्वराः—

दुन्या के हर मुसलमान के दिल में मक्का और मदीना की अक़ीदत और महब्बत रची बसी है, जब वह इन पवित्र जगहों की यात्रा करता है तो आँखें बिछा देता है, क्योंकि यही वह जगहें हैं जहां से उसको ईमान व इस्लाम की दौलत मिली, यह वह दौलत और नेमत है जिसको अपना कर इन्सान मानव जगत में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लेता है मक्का वह जगह है जहां सर्व प्रथम अल्लाह की इबादत के लिए घर का निर्माण हुआ ''निसंदेह सबसे पहले उपासना गृह (इबादत गाह) जो इन्सानों के लिए निर्मित हुआ, वह वही है जो मक्का में स्थित है। उस को भलाई और बरकत दी गई थी और सारे संसार वालों के लिए मार्गदर्शन का केन्द्र बनाया गया था''। सूरः आले इमरान—96

वह दुन्या में घर सबसे पहला ख़ुदा का
ख़लील एक मेमार था जिस बिना का
अज़ल में मशीयत ने था जिसको ताका
कि उस घर से उबलेगा चश्मा ख़ुदा का
(मौलाना अलताफ़ हुसैन हाली पानीपती)

नमाज़ जैसी इबादत जिसको अल्लाह ने अपने लिए ख़ास किया है अल्लाह के दरबार में नमाज़ की क़बूलियत की बहुत सी शर्तें हैं बुन्यादी और अहम शर्त यह है कि नमाज़ पढ़ने वाले का मुँह बैतुल्लाह ख़ान—ए—काबा की ओर हो, किसी अपरिचित जगह पर नमाज़ पढ़ने से पहले इसकी जानकारी आवश्यक है कि नमाज़ी का चेहरा मक्का मुअ़ज़्ज़मा काबे की ओर है या नहीं? दुन्या की तमाम मस्जिदों के मुक़ाबले में मक्के की मस्जिद हराम में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत एक लाख गुना अधिक है।

मक्का मुअ़ज़्ज़मा की प्रमुखता में यह बहुत बड़ी बात है कि अल्लाह ने अपने सबसे बड़े और अन्तिम नबी को मक्के की सरज़मीन पर पैदा किया और आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़िन्दगी के तिरपन 53 वर्ष व्यतीत किये मक्का आपका जन्म स्थान है, मक्के का चप्पा चप्पा एक एतिहासिक यादगार है।

लगभग पाँच हजार साल पहले हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपनी बीवी हज़रत हाजिरा अलै0 और अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को यहां ठहरा कर आबाद किया था और उसी वक़्त काबे शरीफ़ का दुबारा निर्माण किया था, जबसे यह नगर आसपास और पूरी दुन्या का केन्द्र बना था, हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह तआला ने पूरे संसार के लिए रहमत, करुणा दया बना कर भेजा, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में थे, हज़ारों दुरूद व सलाम हो हमारे नबी सल्ल0 पर, मक्के के एतिहासिक जगहों और स्थानों का हम आपसे परिचय कराते हैं।

मुक़ामे इब्राहीमः—

खान—ए—काबा के दरवाज़े के सामने कुछ मीटर के फ़ासले पर एक गुंबद के नीचे एक पत्थर रखा हुआ है वही ''मुकामे इब्राहीम'' है इस पत्थर पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम काबे की तामीर करते थे, चुनांचे उस पत्थर पर उनके पैरों के निशान भी मौजूद हैं।

ज़मज़म कुआँः—

इसका इतिहास यह बताया जाता है कि जिस समय हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हाजिरा और बेटे इस्माईल को मुल्क शाम से ले कर मक्का की ओर हिजरत की थी, उस समय मक्का एक चटयल मैदान था, न कोई इन्सानी आबादी थी और न पानी का नामो निशान था, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी माँ को सख्त प्यास मालूम हुई तो वह पानी की तलाश में सफ़ा मरवा पर दौड़ती फिरीं, लेकिन उन्हें पानी नहीं मिला, इसी बीच उन्होंने एक आवाज़ सुनी और उसकी ओर वह दौड़ीं, तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ज़म ज़म की मौजूदा जगह पर थे, उन्होंने एडी से कुरेदा और कहा जाता है कि अपना पैर मारा, ज़मी से पानी उबल पड़ा, हज़रत हाजिरा अलै0 ने उसे पिया और अपने बच्चे को पिलाया, जब से यह कुवां और पानी मुतबर्रक समझा जाता है, इस्लाम से पहले अरबों की लापरवाही से यह कुवां ढ़क गया था, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने उसको खुलवाया, तब से दुबारा जारी हो गया और अब तक अधिकता के साथ जारी है, हज़रत जाबिर रज़ि0 ने उसकी फ़ज़ीलत के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''कि ज़मज़म से वह मिलता है जिसके लिए वह पिया जाता है'', और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ''भूतल में सबसे उत्तम पानी ज़मज़म का पानी है'', रसायनिक जाँच और मेडिकल स्टडी से मालूम हुआ है कि ज़मज़म का पानी उन अंशो पर आधारित है जिनसे जिगर मेदा, आँतों और गुर्दों को फ़ाइदा पहुँचता है।

ग़ारे सौरः—

जबले सौर वह मशहूर पहाड़ है जिसके ग़ार में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन रातें बसर फ़रमाईं मक्के से पूरब दक्खिन में 3.5 मील की दूरी पर स्थित है, हिज़रत के वक़्त कुफ़्फ़ार मक्का से छुपने के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के साथ इसी ग़ार में पनाह ली थी, कुरआन की सूरः तौबा आयत नं0 40 में इस वाक़िये का ज़िक्र हुआ है।

ग़ारे हिराः—

मक्के के उत्तर में लगभग 1.5 मील की दूरी पर जबले नूर में यह ग़ार स्थित है, यहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबूवत से पहले बतौर इबादत कुछ दिन गुज़ारे थे, इसी ग़ार में वह्यी नाज़िल हुई, 9 रबीउल अव्वल 41 मीलादुन्नबी सल्ल0 अनुकूल 12 फ़रवरी 610 ई0, दोशम्बे का दिन, मानव इतिहास का कैसा नूरानी और बाबरकत दिन था, अर्श इलाही का ज़मीन से सम्बन्ध स्थापित हो रहा था, हज़ारों दुरूद व सलाम हो उस प्यारे नबी पर जिसके द्वारा हम गुनेहगार इन्सानों को अल्लाह की किताब मिल रही थी।

जबले कुबैसः—

यह पहाड़ मस्जिदे हराम के पूरब उत्तर में स्थित है,

यही वह पहाड़ है जिस पर ''मोजज़ा'' शक़्क़ुल क़मर हुआ था, यह वह मोजज़ा है जो मक्के वालों के मुतालबे पर दिखाया गया, चाँद के दो टुकड़े हो गये, यहाँ तक कि लोगों ने ''हिरा'' को उसके दरमियान देखा यानी उसका एक टुकड़ा उस तरफ़ और एक टुकड़ा इस तरफ़ हो गया। (सही बुख़ारी)

शेब अबी तालिबः—

जबल अबी कुबैस से मिली हुई पहाड़ी के दरमियान स्थित है, मदीना हिजरत से पहले शेब अबी तालिब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथ बनू हाशिम, तीन साल तक क़ैद रहे, कुफ़्फ़ार मक्का ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़बीले का समाजी और मआशी (आर्थिक) बाईकाट किया था।

वादिये मुहस्सरः—

यह एक वादी (घाटी) का नाम है, जो मुज़दलफ़ा और मिना के दरमियान वाक़े है, इसी मुक़ाम पर ''असहाबुल फ़ील'' पर अज़ाब आया था, सूरः फ़ील में इसकी तफ़सील मौजूद है, अनुवादः— अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है। ''तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया, क्या उनके उपाय को अकारत नहीं कर दिया? और उन पर पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड भेज दिये, जो उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर फेंक रहे थे, फिर उनका यह हाल कर दिया जैसे जानवरों का खाया हुआ भूँसा।

यह उस घटना का उल्लेख है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शुभ जन्म से 50 दिन पहले घटित हुई थी। यमन की हबशी हुकूमत का ईसाई सम्राट ''अबरहा'' 60 हज़ार की सेना लेकर मक्का पर इस उद्देश्य के लिए चढ़ आया कि काबे को ढा दें। इस सेना में कई हाथी भी थे। जब वह ''मुज़दलफा'' और ''मिना'' के बीच पहुँचा तो अचानक समुद्र की ओर से पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड अपनी चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुए आये और उन्होंने इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी। जिस जिस पर कोई कंकरी पड़ती उसका मांस गल—गल कर झड़ना शुरु हो जाता। इस तरह यह सारी सेना तबाह हो गई। अरब में यह घटना बहुत प्रसिद्ध थी और इस सूरा फील के अवतरण के समय मक्का में हज़ारों व्यक्ति ऐसे मौजूद थे जिनकी आँखों के सामने यह घटना घटित हुई थी। सारे अरब वाले मानते थे कि हाथी वालों की यह तबाही सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत से हुई।

मदीना मुनव्वराः—

मक्का मुअज्ज़मा के बाद मुसलमानों का सबसे प्रिय और सम्माननीय नगर ''मदीना मुनव्वरा'' है मक्का और मदीना दोनों को मिला कर ''हरमैन शरीफ़ैन'' कहते हैं, मदीने का पुराना नाम ''यसरिब'' था जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा हिजरत करके तशरीफ़ लाये तो इस का नाम मदीनतुर रसूल और दारुल हिज़रत हुआ, मक्के से मदीने की दूरी 475 किलो मीटर है, मदीना मुनव्वरा बहुत हरा भरा शहर है यहां खेती बाड़ी भी होती है, बाग़ात भी बहुत हैं, जिसमें खजूर, अंगूर, अनार, सेब दूसरे फल बड़ी मात्रा में होते हैं, जाड़ा और गर्मी

शेष पृष्ठ.....27..पर..

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मस्जिद किसे कहते हैं? क्या मस्जिद के लिए इमारत का होना शर्त है? एक साहब का कहना है कि बगैर इमारत के खुली जगह सहन वगैरा मस्जिद नहीं कहलाएगी, क्या खुली जगह जहाँ बा जमाअत नमाज़ होती हो मस्जिद नहीं कहलाएगी?

उत्तरः मस्जिद ऐसी जगह को कहते हैं, जिसको किसी मुसलमान ने ख़ालिस अल्लाह के लिए फर्ज़ नमाज़ अदा करने के लिए वक़्फ कर दिया हो, उस पर इमारत और छत वगैरा होना शर्त नहीं है, अल्लामा तहतावी ने सराहत की है कि किसी जगह को मस्जिद करार दिए जाने के लिए इमारत का होना शर्त नहीं है।

(तहतावी पेज नं0 536)

प्रश्नः भूतपूर्व मुतवल्ली के पास मस्जिद की कुछ रक़में हैं वह अदा नहीं कर पा रहे हैं, क्या मौजूदा मुतवल्ली उसको मुआफ़ कर सकते हैं?

उत्तरः मुतवल्ली के जिम्मा मस्जिद की निगरानी और मस्जिद के हितों का तहफ़्फ़ुज़ है, मस्जिद की जाएदाद या रक़म ज़ाये करना या मुआफ़ करना मस्जिद के हित के ख़िलाफ़ है, इसलिए मुतवल्ली को रक़म मुआफ करने का हक़ नहीं है।

(रद्दुल मुहतारः 4/407)

प्रश्नः एक गाँव की मस्जिद के इहाता में कुआँ है, क्या आम लोगों को इससे फायदा उठाने की इजाज़त दी जा सकती है या नहीं? जिन हज़रात ने मस्जिद और कुआँ बनवाया वह अब बाहयात नहीं, उनकी मंशा भी मालूम नहीं है तो ऐसी सूरत में क्या इजाज़त दी जा सकती है?

उत्तरः चूँकि कुआँ मस्जिद के इहाता में है, पहले से जब इजाज़त नहीं रही है इसलिए इस कुआँ को अब वक़्फे आम करके आम लोगों को इस्तिफादा की इजाज़त नहीं दी जा सकती है, मस्जिद के इहाता के अन्दर होना इस बात की अ़लामत है कि यह वक़्फे आम नहीं बल्कि मस्जिद के लिए ख़ास है।

प्रश्नः बाज़ लोग जुह्र और अ़स्र की नमाज़ के बाद मस्जिद ही में सोये रहते हैं और वक़्त होने पर नमाज़ अदा करते हैं, जब उनसे कहा जाता है, इस तरह सोने से मस्जिद की हुर्मत बाक़ी नहीं रहती बल्कि मुसाफ़िर खाना मालूम होता है तो वह जवाब देते हैं हम लोग नमाज़ के इंतिज़ार में मस्जिद में रहते हैं, सवाल यह है कि क्या इस तरह मस्जिद में लेटने की इजाज़त होगी?

उत्तरः मस्जिद में मोतकिफ और मुसाफिर को सोने की इजाज़त है, मक़ामी लोग जमात के इंतिज़ार में एतिकाफ़ की नीयत से सो सकते हैं, लेकिन मस्जिद में बिस्तर डाल कर मुसाफिर खाना की तरह सोना दुरुस्त नहीं है, हर हाल में आदाबे मस्जिद का लिहाज़ रखना ज़रूरी है।

(फतावा हिन्दियाः 5/321)

प्रश्नः एक कालोनी में कुछ मुसलमान रहते हैं, वहाँ मस्जिद नहीं है, तमाम लोग सरकारी मुलाजिम हैं इतवार को एक साहब के मकान पर सब जमा होते हैं ताकि कुछ दीन की बातें हों, इस मकान के एक कमरा में सब जमात से उस दिन नमाज़ अदा करते हैं, साहबे मकान ने वक्तन फ़वक्तन अपने कालोनी वालों और ख़ुद अपने घर वालों के लिए नमाज़ पढ़ने के लिए इस कमरा को ख़ास कर दिया है, सवाल यह है कि क्या इस कमरा की हैसियत मस्जिद की हो गई है? क्या उस पर मस्जिद के अहकाम जारी होंगे? बाज़ हज़रात का ख़्याल यह है कि यह मस्जिद है इसलिए मस्जिद के अहकाम नाफिज़ होंगे।

उत्तरः साहिबे मकान ने इस कमरे को अगर मस्जिद की नीयत से नमाज़ के लिए ख़ास किया है और लोगों को इसी मक़सद से नमाज़ अदा करने की इजाज़त दी है तो यह कमरा मस्जिदे शरई है और मस्जिद के अहकाम इस पर नाफिज़ होंगे लेकिन अगर इस कमरा को अपनी मिलकियत में बाक़ी रखते हुए महज़ नमाज़ अदा करने के लिए ख़ास किया है तो यह मस्जिदे शरई नहीं है और न ही मस्जिद के अहकाम उस पर नाफिज़ होंगे।

(रद्दुल मुख़्तारः 4/341)

प्रश्नः एक मस्जिद के किराये के मकानात और दुकानें हैं और उनकी आमदनी आये दिन बढ़ती जा रही है, मस्जिद के खर्चों से आमदनी काफी ज़ाइद है, सवाल यह है कि एक मस्जिद की ज़ाइद आमदनी दूसरी मस्जिद में मुंतक़िल कर सकते हैं या नहीं?

उत्तरः अस्ल तो यही है कि एक वक़्फ की आमदनी दूसरे वक़्फ में मुंतक़िल करना दुरुस्त नहीं है लेकिन अगर वक़्फ नामा में सराहत हो कि अगर मस्जिद की आमदनी जाइद हो तो दूसरी मस्जिदों में उसे मुंतक़िल कर सकते हैं तो वाक़िफ की सराहत की बिना पर जाइद आमदनी दूसरी मसाजिद में मुंतक़िल की जा सकती है, लेकिन याद रहे कि वक़्फ़ की ग़रज़ और मक़सद का लिहाज़ और उस की शराइत की पाबंदी ज़रूरी है।

(रद्दुल मुहतारः 3/515, किताबुल वक़्फ)

❖❖❖

मुसलमानों के दो पवित्र.....

दोनों मौसम यहां होते हैं, जलवायु माध्यमिक है, इस शहर की बड़ी विशेषता यह है कि अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना वतन बना कर इसको सदैव के लिए सम्मान प्रदान किया। इसी शहर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र मुबारक है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बनाई हुई मस्जिद है, जहाँ एक रक़्अत नमाज़ का सवाब एक हज़ार रकअ़तों के बराबर है। इसलिए इतिहास से सम्बन्धित बड़ी मुबारक यादें हैं। इसी शहर में जन्नतुल बक़ी अलग़रक़द मदीने का क़दीम क़ब्रिस्तान है जहाँ दस हज़ार सहाबा का मदफ़न है, इसके अलावा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे, बेटियाँ, हज़रत ख़दीज़ा, हज़रत मैमूना के अलावा सारी बीवियाँ इसी कब्रिस्तान में दफ़न हैं, अल्लाह की रहमतें व बरकतें नाज़िल हों आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल व औलाद पर।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 –अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

दूसरे धर्मों की झलकियांः–

इस्लामी शरीयत के इन कानूनों और निर्देशों से अवगत हो जाने के बाद अनुचित और बे मौका न होगा अगर यहाँ निकाह जैसे अहम काम और इंसान की अनिवार्य ज़रुरत के बारे में कुच्छ दूसरे धर्मों के क़ानूनों और निर्देशों का भी थोड़ा बहुत ज़िक्र करते चलें ताकि अंदाज़ा हो सके कि दूसरे धर्मों में इंसानी ज़रूरतों और उसकी प्राकृतिक इच्छाओं को कितना महत्व दिया गया है

ईसाई धर्मः–

दुन्या के एक बहुत ही मशहूर और विकसित राष्ट्रों के अपनाए हुए धर्म ''क्रिश्चिनिटी'' में आपको यह सुन कर अचम्भा होगा कि ऐसी अहम ज़रूरत के बारे में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया इस हक़ीक़त का किसी और ने नहीं ख़ुद एक ईसाई शोधकर्ता के निबंधकार ने किया वह लिखता है ''न्यू टेस्टामेंट (यानी इंजील) में शादी के बारे में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं'' फिर आगे चल कर लिखता है :– ''बाइबल में दर असल शादी के बारे में कुछ नहीं कहा गया''।

(इन्साइक्लोपीडिया जिल्द–8/433)

कुछ और आगे बढ़ कर उसने यह हक़ीक़त भी मानी कि ''क्रिश्चिनिटी में शादी की कोई ऐसी रीति नहीं जो प्राचीन रोमन रीति रिवाज में न पाई जाती हो''

(इन्साइक्लोपीडिया जिल्द–8/433)

इन सच्चाइयों के सामने आ जाने के बाद यह नतीजा निकालना बे मौक़ा न होगा कि वर्तमान ईसाई धर्म वैवाहिक सम्बन्ध के विस्तृत निर्देशों से खाली है और वह पूरे तौर पर या अक्सर विवरण में प्राचीन रोमन रीति रिवाज का संग्रह है और बस उसी से भरा हुआ है इससे आगे बढ़ कर यह कि औरत के सम्मान और उससे यौन सम्बन्ध बनाने में शर्म व हया का वर्तमान क्रिश्चिनिटी में बहुत कम लेहाज़ है बल्कि है ही नहीं इस बारे में भी किसी दूसरे का नहीं बल्कि मशहूर ईसाई अंग्रेज़ दार्शनिक ''हर्बर्ट स्पेंसर'' का कोटेशन पेश किया जाता है वह कहता है :– ''ग्यारहवीं और पंद्रहवीं सदी के बीच (इस्लाम के आने के आठ नौ सौ साल बाद तक) ब्रिटेन में आमतौर पर बीवियां बिकती थीं। ग्यारहवीं सदी के आखिर में ईसाई धार्मिक अदालतों ने एक क़ानून को रवाज दिया जिसमें पति को यह हक दिया गया था कि वो अपनी बीवी किसी दूसरे व्यक्ति को उधार दे सकता है जितने समय के लिए चाहे।''

इससे भी ज़ियादा शर्मनाक और आश्चर्यजनक ये बात थी कि ''धार्मिक और आध्यात्मिक गुरुओं को किसानों की नई नवेली दुल्हन 24 घंटे तक अपने पास रखने और उस से आनंद लेने का हक हासिल था''। (अल–मरअतु बैनल फिक़्ह वल क़ानून पृष्ठः 211)

सब से बढ़ कर अजीब ये खुलासा है कि सन् 1805 ई० तक अंग्रेज़ी क़ानून के अनुसार पति को बीवी के बेचने का पूरा अधिकार था और उसकी क़ीमत भी क़ानून की तरफ़ से निर्धारित थी वो इतनी कम थी कि जिसे लिखते हुए भी शर्म आती है यानी सिर्फ 6 पेंस (आठ आनें) और अभी हाल ही में (कुछ साल

पहले) ''इटली'' में एक व्यक्ति ने अपनी बीवी को बेच दिया और कीमत किस्तों में लेना तय हुआ जब खरीदार ने आखरी किस्तों के अदा करने में सुस्ती की तो बेचने वाले उस पति ने उस औरत (बीवी) को क़त्ल कर दिया। (अल–मरअतु बैनल फिक्ह वाल क़ानून पृष्ठः 11)

इस जगह अचानक सूरह माइदा की आयत ''लोग क्या फिर जाहिली ज़माने का फैसला चाहते हैं और फैसला करने में कौन अल्लाह से अच्छा होगा यकीन रखने वालों के नजदीक''।

यूनानी कानूनः–

यूनानी क़ानून में औरत की हैसियत एक मामूली सामान की तरह थी जिसकी बाज़ार में खुले तौर पर ख़रीद व फ़रोख़्त होती।

(मदा हुर्रियातुज्जौजैन जिल्द–1 पृष्ठः 27) उसे ना पूरी आज़ादी हासिल थी न नागरिक अधिकार, विरासत भी नहीं दी जाती थी पूरी ज़िंदगी वो किसी न किसी मर्द के पंजे में मुसीबत में गिरिफ़्तार रहती शादी से पहले अभिभावक के, शादी के बाद पति के अत्यचार के पंजे में रहती न अपने माल में इस्तेमाल का हक़ रखती न जान में।

लेकिन जब यूनानी सभ्यता के उदय का ज़माना आया तो आज़ाद औरत को ऐसी ''आज़ादी'' मिली कि वो महफिल की शमा और सभा की रौनक बन गयी जिसके नतीजे में अश्लीलता और बेहयाई अपने चरम पर पहुँच गयी कि वैश्यालय ही राजनीति और साहित्य के केंद्र बन गए और अंततः ''देवी'' की हैसियत हासिल हो गयी फिर क्या था निर्वस्त्र प्रतिमाएं माथा टेकने के स्थान बन गए।

रूमी कानूनः–

प्राचीन रूमी क़ानून का ये पक्ष भी अजीब व ग़रीब और बड़ा बर्बर था कि उस में परिवार के मुखिया को परिवार के सभी सदस्यों पर इस हद तक अधिकार प्राप्त था कि वो न सिर्फ अपनी पत्नी बल्कि बहु बेटों और पोतों को बेचने और निर्वासित करने का भी अधिकार रखता था और हर प्रकार की यात्ना बल्कि क़त्ल करने की भी उस को इजाज़त थी। रोम की कुछ सभाओं में आपसी सलाह–मश्वरे से ये तय किया गया था कि औरत एक नापाक जानवर है जिस में रूह नहीं होती उसे ज़िंदा गाड़ देना बाप के लिए न सिर्फ वैध बल्कि इज़्ज़त की निशानी और सज्जनता का मानक समझा जाता था कुछ लोगों का विचार था कि औरत को कोई भी क़त्ल कर दे तो उस पर न बदला अनिवार्य और न ही उस ख़ून की कीमत। रसूले अकरम (सल्ल0) की पैदाईश के बाद और नबी बनाए जाने से पहले यानी सन् 586 ई० में फ्राँस ने औरत पर ये ''एहसान'' किया कि बहुत से मतभेदों और वाद–विवाद के बाद ये प्रस्ताव पास किया कि ''औरत इंसान है तो, मगर वो सिर्फ़ मर्द की सेवा के लिए पैदा की गयी है''।

(1. मआरिफुल कुरआन जिल्द–1 पृष्ठः 549, अल–मरअतु बैनल फिक्हि वल क़ानून पृष्ठः 20)

लम्बे समय के बाद ''जस्टीनेन'' ने सुधार किये लेकिन इन सुधारों के बाद भी औरत अपने पति के साथ ऐसे बंधन में बंध जाती थी जिस से पूरे तौर पर पति को वर्चस्व प्राप्त हो जाता (इस बंधन का नाम ही सरदारी कबूल कर लेना था'') और ये 3 तरीक़ों से वजूद में आता।

1. किसी सभा में विधवत रूप से धर्म गुरु के द्वारा।

शेष पृष्ठ.....33..पर...

ऐकता का संदेष्टा

–अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0–
अनुवादकः इं0 जावेद इक़बाल

(रसूले वेहदत)

ईरान निवासियों का पूज्य अहरमन व यज़्दान उन के खुदा थे, मगर हिन्दू आर्यों के यहाँ उस का स्तर सूर्य से अधिक नहीं। हिन्दू आर्यों के ब्रह्मणों ने अपने स्रष्टा की ऐसी अनोखी कल्पना की कि जिसने अपने मुख से उन की रचना की थी अर्थात उन को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया था और वह विशेष रूप से उन का ही परमेश्वर था, उसने अन्य हिन्दू समुदायों की रचना अपनी भुजाओं, हाथों, पैरों से करके उनको निम्न कोटियों में बाँट दिया था।

सामी समुदाय का ईश्वर केवल उन्हीं का था बल्कि इस्राईल वंशियों के अनुसार तो वह विशेष रूप से उन्हीं के परिवार का था।

उदाहरणार्थ– ''परमेश्वर मेरे पैद0 इब्राहीम का प्रभु'' (पैद0 24–27) ''ऐ मेरे पिता इब्राहीम के प्रभु और मेरे पिता इस्हाक़ के प्रभु (पैद0 9–44)

''मैं तेरे पिता का प्रभु और इब्राहीम का प्रभु और इस्हाक़ का प्रभु और याकूब का प्रभु हूँ'' (ख़ुरूजः 5–37)

''फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इस्राईल वंशियों से यह कहियो कि परमेश्वर, तुम्हारे पिता के प्रभु, इब्राहीम के प्रभु और इस्हाक़ के प्रभु और याकूब के प्रभु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'' (ख़ुरूज 3–15)

''मेरे पिता का प्रभु इब्राहीम का पूज्य, इस्हाक़ का आराध्य और उन्हें कह तुम्हारे पिता का प्रभु, इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब का प्रभु ऐसा कहता हुआ मुझे दिखाई दिया''।

(पैद0 3–15–16)

परमेश्वर, इस्राईल का प्रभु यह संदेश देता है कि तू मेरे लोगों को जाने दे''

(ख़ुरूजः 5–1)

''फ़िरऔन ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उसकी वाणी सुनूं और इस्राईल वंशियों को जाने दूं, मैं परमेश्वर को नहीं जानता..... तब उन्होंने कहा कि इब्रानियों के प्रभु ने हम से भेंट की।''

''और उनसे कहियो कि परमेश्वर इब्रानियों के प्रभु ने मुझ को भेजा है और कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे। (16)

वह मेरे पिता का प्रभु है'' (ख़ुरूज 15–2)''

इस शैली के प्रयोग का कारण यह है कि आदि काल में परमेश्वर की उपासना केवल आदरणीय इब्राहीम अलै0 की संतान में ही सीमित थी। इसी कारण पवित्र कुरआन में भी आदरणीय याकूब अलै0 के प्रश्न पर उन के बेटों के मुख से इसी शैली में उत्तर का उल्लेख किया गया है।

''हम आपके प्रभु और आपके बाप, दादों, इब्राहीम और इस्हाक़ के प्रभु की उपासना करेंगे'' (सूरः बक़रा)

परन्तु इस्राईली वंशियों ने भ्रम वश यह समझ लिया कि बाइबिल में वर्णित ईश्वर विशेष रूप से उन्हीं का है और दुन्या का कोई दूसरा समुदाय उनका साझी नहीं वह तो केवल उन्हीं का पारिवारिक परमेश्वर है।

ईसाइयों का ईश्वर ईसाइयों का पिता था और इस पिता के परिवार में उनके अतिरिक्त कोई अन्य साझी नहीं था। इब्राहीम और इस्हाक़ वाला परमेश्वर ईसाई समुदाय के अनुसार केवल अविवाहित माँ के पुत्र का पिता मात्र रह गया। इंजील में कई स्थानों पर सम्बोधन इस प्रकार है– ''मेरा पिता जो आकाश में है''।

अंतिम संदेशवाहक की शिक्षाः–

यह भी एक ईश्वर की भ्रामिक विचार धारा, जिसके फलस्वरूप ईश्वर को वंशों, परिवारों और व्यक्ति विशेष में सीमित कर दिया गया था। अन्तिम काल में अन्तिम ईशदूत की नियुक्ति हुई जिसकी शिक्षा ने अद्वैतवाद के सभी दृष्टिकोणों को स्पष्ट किया और साथी ''एकं ब्रह्म'' के वास्तविक अर्थ एवं आशय को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया। जिसका तात्पर्य था कि वह एक ही ईशवर है जो ब्रह्मा भी है, विष्णु भी और वही महेश भी है। अर्थात पैदा करने वाला भी है और पालने वाला व मारने वाला भी, यह वह विभिन्न नाम उसके गुणात्मक पर्यायवाची हैं वह काले और आर्य और द्राविण, ईरानी और तूरानी, हिन्दी और अरबी, ईसाई और यहूदी, हिन्दू और मुसलमान बल्कि साधनालीन साधक और कुकर्मी दुष्ट सब का समान पालनहार है, और सब उस की सत्ता में समान दास हैं। ब्राह्मण हो कि शूद्र, राजा हो कि रंक, बड़ा हो कि छोटा, दास या बंदा के नाते सब का स्तर उसके समक्ष समान है।

इस संदेश को स्वीकारने वाले समर्पितों को ईश्वर की ओर से कुरआन में आदेश हुआ कि इस संदेश को अस्वीकार करने वालों को अवगत करा दो कि हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही है और हम उसके समर्पित आज्ञाकारी हैं।

सब उसी के बन्दे हैं और वह अकेला सब का रचयिता और संरक्षक है वही जीवन प्रदान करने वाला एवं मौत देने वाला है। इस संदेश में आदरणीय मुहम्मद सल्ल0 का कोई अपना विशेष ईश नहीं है, उनके वंश, कुरैश का भी ईश नहीं है उनकी जन्म भूमि अरब का भी अलग ईश नहीं, निष्कर्ष यह कि मुसलमानों का कोई पृथक ईश नहीं है। उनकी शिक्षानुसार तो सारे संसार का केवल एक ईश्वर है। एक ही पालनहार ब्रह्म है, जिस पर सब का समान अधिकार है। सब उसके दास हैं और वह उनका एक मात्र संरक्षक है।

कुर्आन में सबसे पहले अध्याय की सबसे पहली प्रार्थना और उस प्रार्थना का पहला वाक्य जो आप सल्ल0 ने इंसानों को सिखाया यह है– ''सारी प्रशंसा उस एक ईश्वर के लिए है जो समस्त संसारों का पालनहार है'' (कुरआन 1:1)

अतः एक ही पालनहार है जिसमें केवल यह संसार ही नहीं बल्कि सारे संसारों की उत्पत्तियां समान रूप से भागीदार हैं। इस प्रकार आप सल्ल0 की शिक्षा उन सभी मतभेदों को मिटा देने वाली है जो एकेश्वरवाद के समर्थक होने के साथ साथ संसार के विभिन्न समुदायों और वंशों को भिन्न भिन्न ईश्वरों में विभाजित कर देते थे। आदरणीय मुहम्मद सल्ल0 की शिक्षा ने स्पष्ट कर दिया कि हम सब एक ही प्रभु के बन्दे होने के फलस्वरूप आपस में भाई भाई हैं। ब्राह्मण हों कि पासी, सैय्यद हो कि शेख, योरोपियन हों या अफ़्रीकन सब

एक ही मालिक के बन्दे और एक ही रचयिता की रचनायें हैं।

कुरआन की अन्तिम सूरः में उस का वर्णन इस प्राकर किया है ''सारे इंसानों का पालनहार सारे इन्सानों का मालिक सारे इंसानों का पूजनीय यह है वह ''एकं ब्रह्म'' जिसका जलवा हमें हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के मार्गदर्शन में देखने को मिलता है और यह है वह हक़ीक़त जिसकी पहचान हमें उनकी शिक्षा से होती है। अर्थात वह एक ही सशक्त सम्राट और पालनहार है, जिस की पालनहारिता में समस्त सृष्टि, धरती और आकाश, जीव और जन्तु, संसार के समस्त परिवार, वंश और समुदाय समान साझी हैं। इसी को कुरआन में इस प्रकार कहा गया है– ''निःसन्देह यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं तुम सब का पालनहार हूँ सो मेरा ध्यान करो और सावधान रहो।''

यह वह उच्चतम विचारधारा है जिसने अरब और ग़ैर अरब, तुर्क और ताजिक, हिन्द और सिंध, यूरोप और एशिया, चीनी और जापानी सब को एक ख़ुदा, एक ब्रह्म और समान भाई चारगी की भावना में गूंध दिया। इतना ही नहीं बल्कि मानव और दानव सभी को एक पालनहार के सामने झुका कर एक दूसरे की सेवा का पाठ पढ़ाया।

संदेश की एकताः–

अद्वैतवाद को विस्तार से स्पष्ट करने के बाद संदेशों की समानता अर्थात एक ही मूल संदेश की भावना को समझना भी आवश्यक है जिसका सुधार हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के द्वारा किया गया। ईश्वरीय संदेश के सम्बन्ध में जो भ्रांतियां समाप्त हुईं और जो उच्च स्तरीय विचार धारा प्रस्तुत की गई उस को भी विस्तार पूर्वक समझने की आवश्यकता है।

श्रेष्ठता का भ्रमः–

संसार के विभिन्न समुदायों से जो मूल भ्रम संदेशवाहकों के संबन्ध मे हुआ, वह यह था कि ईशदूतों को विशेष सम्प्रदायों, वंशों एवं समुदायों में सीमित कर दिया गया था। आर्ववृत के अनुसार ईश्वाणी केवल उन्हीं की धरती के ऋषियों एवं मुनियों ने सुनी जो केवल वेदों में ही सुरक्षित है।

ज़रदुश्त वाले ईरानियों के अतिरिक्त सब को यज़दान की ज्योति के दर्शन से वंचित मानते थे। और ईसाइयों ने केवल अपने वर्ग को ईश्वर के पुत्र का उत्तराधिकारी माना, परन्तु इस्लाम ने इस सीमित विचार धारा को ईश्वर की दया, न्याय एवं कृपा के विरुद्ध घोषित किया। कुरआन में अनेक स्थानों पर इस का खण्डन किया गया है।

एक यहूदी आदरणीय मूसा के अतिरिक्त अन्य सब ईश दूतों का विरोध कर सकता है। एक ईसाई केवल ईसा अलै0 को ईश पुत्र मान कर ईसाई रह सकता है। एक हिन्दू समस्त संसार को शूद्र समझ कर भी पक्का हिन्दू हो सकता है। एक ज़ोरोस्टर हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा एवं हज़रत ईसा का खण्डन करके भी अधर्मी नहीं हो सकता। परन्तु एक मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के साथ साथ अन्य सभी ईशदूतों को यदि मान्यता न दे, उन सब के प्रति आदर भाव न रखे तो मुसलमान नहीं हो सकता।

संकीर्णता की परिधि केवल इतने में सीमित न थी कि ईश दूत देश, समुदाय और

भाषा से बंधे थे बल्कि इससे बढ़ कर यह कि वे लोग ईशदूतों के मध्य भी भेदभाव करते थे अर्थात कुछ को मानते थे और कुछ को नहीं तथा उन पर भांति भांति के आरोप लगाते थे। कुरैश वंशी हज़रत ईसा का नाम सुन कर ही क्रुध हो जाते थे। यहूदी और ईसाई आदरणीय दाऊद अलै0 और सुलैमान को सम्राट तो मानते थे परन्तु ईशदूत नहीं।

आदरणीय मोहम्मद सल्ल0 ने अरब, गैर अरब, तुर्क और ताजिक, हिन्द और सिंध, योरोप और एशिया, पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के समस्त भेदभावों को समाप्त करते हुए संदेश दिया कि प्रत्येक देश और प्रत्येक समुदाय में ईश्वर की ज्योति का दर्शन हुआ है और उसकी वाणी अवतरित हुई है। अतः बिना किसी अन्तर और भेदभाव के समस्त ईशदूतों एवं संदेश वाहकों को ईश्वर का समान स्तरीय, सत धर्म का संदेष्टा स्वीकार करना चाहिए।

.....जारी.....

घरेलू मसायल.....

2. गुप्त ख़रीदारी के द्वारा।

3. मुकम्मल एक साल तक दोनों के साथ रहने सहने की वजह से।

उस ''उदार वादी और विकसित ज़माने में भी'' इन तीन तरीक़ों से औरत पर अधिकार अभिभावक से पति की तरफ़ ट्रांस्फर हो जाया करता था और पति उन सारे अधिकारों का मालिक हो जाता जो अभिभावक को हासिल होते।

(अल–मरअतु बैनल फिक्हि वल कानून पृष्ठः 15–16)।

बुद्धमतः–

ईसाई धर्म के बाद एक दूसरे धर्म, कि जिसके मानने वाले भी करोड़ों की तादाद में हैं के बारे में इसी ''इन्साइक्लोपीडीया'' में लिखा हैः– ''बुद्ध धर्म में शादी सिर्फ समाजी रिश्ता है।'' मालूम हुआ कि निकाह की धार्मिक हैसियत मानो कुछ है ही नहीं और न मूल धर्म में इस बारे में निर्देश दिये गए हैं बस एक सामाजिक सम्बन्ध है इसका पता इस बात से भी चलता है जो आगे आ रही है। ''बुद्ध भिक्षु इस में कोई अनुष्ठान संपन्न नहीं कराते।

(अल–मरअतु बैनल फिक्हि वल क़ानून जिल्द–5 पृष्ठः 728)

.....जारी.....

माँ की महब्बत –इदारा

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में दो औरतें थीं, दोनों के एक एक लड़का था, इत्तिफ़ाक़ से एक लड़के को भेड़िया उठा ले गया, अब वह दोनों आपस में लड़ने लगीं, एक कहती थी कि तेरे बेटे को उठा ले गया, दूसरी कहती थी कि नहीं मेरा बेटा सलामत है, तेरे लड़के को उठा ले गया।

आख़िर कार यह दोनों हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास फ़ैसला कराने आईं हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी औरत को लड़का दिलवा दिया, फिर वह दोनों दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आईं और वाक़िआ बयान किया, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ''छुरी लाओ तो मैं इस लड़के को आधा आधा करके दोनों को दे दूँ'' यह सुन कर छोटी औरत घबरा गई, कहने लगी अल्लाह आप पर रहम फ़रमाये, आप ऐसा न कीजिए, यह लड़का बड़ी ही औरत का है यानी मैं अब इस लड़के की दावेदार नहीं हूँ कि यह मेरा लड़का है, बच्चा ज़िन्दा व सलामत रहे, चाहे जिसके पास रहे।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम समझ गये और वह लड़का छोटी औरत को दिलवा दिया।

◆◇◆

सय्यिदे वुल्दे आदम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

–हज़रत मौलाना मो0 अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 –हिन्दी लिपिः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

अगरचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र मुबारक के लिए एक मुसतक़िल रिसाला नफ़–हए–अम्बरिया लिख चुका हूँ मगर इस जगह भी चन्द मुख़्तसर कलिमात में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तज़किरा ज़रूरी मालूम हुआ, सबसे पहले इसलिए कि मक़सूदे असली आप की ज़ाते कामिलुस्सिफ़ात है ख़ुलफ़ा– ए–राशिदीन रज़ि0 का तज़किरा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात से तअल्लुक़ की वजह से है दूसरे इसलिए कि जब किसी जमाअ़त का ज़िक्र किया जाए तो ज़रूरी है कि पहले उस जमाअ़त के इमाम का ज़िक्र हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहरे मक्का में सरदार कुरैश हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के घर में पैदा हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद माजिद का नाम नामी अब्दुल्लाह और वालिद–ए–मोहतरमा का इस्मे गिरामी आमिना था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत ब सआ़दत रबीउल अव्वल के महीने में दोशम्बा के दिन सुब्हे सादिक़ के वक़्त आठवीं, नवीं या बारहवीं तारीख़ को हुई। अंग्रेज़ी तारीख़ बीस अप्रैल सन् पाँच सौ इकहत्तर ईसवी बयान की गई है उस वक़्त ईरान में नौशेरवाने आदिल की हुकूमत थी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बाबरकत के वक़्त बहुत से अजाइबे कुदरत का ऐसा हुजूर हुआ कि कभी दुन्या में वह बातें नहीं हुईं, बे ज़ुबान जानवरों ने इन्सानी ज़ुबान में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी सुनाई, दरख़तों से आवाज़ें आईं, बुत परस्तों ने बुतों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी सुनी, दुन्या के दो बड़े बादशाहों यानी शाहे फ़ारस व शाहे रूम को बज़रिए ख़्वाब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़मत व बलन्दी से आगाही दी गई और यह भी उनको बताया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान–शौकत और जाहो जलाल के सामने न सिर्फ़ क़िसरा और क़ैसर बल्कि दुन्या की शौकतें सरनिगूं हो जाएंगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी माँ के पेट में थे कि वालिद माजिद का इन्तिक़ाल हो गया और चार वर्ष की उम्र में वाल्दा का साया भी सर से उठ गया।

किसी से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पढ़ना लिखना कुछ नहीं सीखा, न किसी से कोई हुनर न कोई कमाल हासिल किया हत्ता कि शिअ़र व सुख़न जिस का अरब में बहुत रवाज था उसकी मश्क़ भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न की।

हज़रत हलीमा रज़ि ने अजीब व ग़रीब हालात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुशाहिदे किये। एक बड़ा हिस्सा आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के बचपन के हालात व कमालात का उनका मंकूल है सच यह है कि हज़रत हलीमा रज़ि0 बड़ी ख़ुश नसीब औरत थीं।

शक़्क़े सद्र आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चार मरतबा हुआ, दो मरतबा नुबुव्वत से पहले और एक मरतबा बेअ़सत से पहले और एक मरतबा मेराज़ से पहले, पहली मरतबा जब शक़्क़े सद्र हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हलीमा रज़ि0 के यहां थे अपने रज़ाई भाई के साथ बकरियां चाराने जंगल गए हुए थे एकाएक वह ख़ौफ़ ज़दह हो कर दौड़ते हुए हज़रत हलीमा के पास आए कि ऐ माँ! मेरे कुरैशी भाई को दो सफ़ैद मर्दों ने आ कर लिटाया और उनका सीना चाक कर दिया यह सुन कर वह बहुत परेशान हुईं और फ़ौरन जंगल गईं, देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहीह़ व सालिम हैं मगर चेहर–ए–मुबारक पर ख़ौफ़ के आसार हैं, फिर सारा वाक़िआ़ ख़ुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किया। हर मरतबा शक़्क़े सद्र में फ़िरिश्ते आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सीन–ए–मुबारक चाक कर के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ल्बे अतहर को एक तश्त में जिस में ज़मज़म का पानी होता था धोते थे।

बुत परसती और बेहयाई के कामों से दूरी, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सदाक़त और अमानत क़ब्ले नुबुव्वत भी तमाम मक्का में मशहूर और मुसल्लम थी। यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लक़ब सादिक़ और अमीन, आम जन की ज़बान पर था।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र पच्चीस साल की हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह़ हुआ जो ख़ानदाने कुरैश में एक बड़ी दानिश्मन्द और दौलतमंद ख़ातून थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के औसाफ़ व कमालात सुन कर यह अंदाज़ा कर चुकी थीं कि जिस नबी–ए–मौऊद की पेशीनगोई उलमा–ए–किराम यहूद व नसारा बयान करते हैं क्या अ़जब है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही हों, हज़रत ख़दीज़ा रज़ि0 की उम्र बवक्ते निकाह़ चालीस साल थी, आप की सब औलाद उन्हीं के बत्न से हैं सिवाए हज़रत इब्राहीम रज़ि0 के कि वह हज़रत मारिया रज़ि0 के बत्न से थे।

जब उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई तो दोशम्बा के दिन 17 रमज़ान को और एक क़ौल के मुताविक़ 24 रमज़ान को जब ख़ुसरू परवेज़ बादशाह ईरान के विराजमान होने का बीसवां साल था वह दौलते उज़मा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अता हुई जो रोज़े अज़ल से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए नाम ज़द हो चुकी थी, जिसकी दुआ हज़रत ख़लील अलै0 ने मांगी, जिस की बशारत हज़रत मसीह अलै0 ने दी यानी ह़क़ तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना रसूल बना कर मबऊ़स किया। सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व अ़ला आलिहि व बारिक व सल्लिम।

इसके बाद पूरे तेईस साल तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी शफ़क़त, बड़ी राफ़त, बड़ी

जाफ़िशानी, बड़ी जफ़ाकशी के साथ फ़राइज़े रिसालत को अदा फ़रमाया और बड़ी तक़लीफें बरदाश्त कीं उस वक़्त दुन्या में हर तरफ़ इबलीस की हुकूमत थी, हर तरफ़ कुफ़्र व शिर्क और हर क़िस्म के मज़ालिम से ज़मीन तारीक हो रही थी ईसाई, यहूदी, मजूसी सब एक हालत में थे, अरब व अजम सब की एक कैफियत थी फ़वाहिश व मआसी को कोई ऐब न समझा जाता था, चोरी और रहज़नी लोगों ने पेशा बना लिया था, अपनी औलाद को अपने हाथ से क़त्ल कर देना कोई बड़ी बात न थी उस हादिये बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यकायक दुन्या की काया पलट दी और बजाए कुफ़्र व शिर्क के ईमान की रौशनी से ज़मीन को जगमगा दिया, थोड़े दिनों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम ने ख़ुदा परस्तों की एक बड़ी जमाअत तैयार कर दी जो आला तरीन अख़लाक़ और कामिल तरीन जुहदों तक़्वे में उस मर्तबे पर थे कि तारीख़े आलम उनकी मिसाल पेश करने से आजिज़ है।

नुबुव्वत के बाद तेरह बरस आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ियाम मक्का मुअज़्ज़मा में रहा, फिर हिज़रत करके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये, 10 साल मदीना में क़ियाम रहा उस दस साल में उन्नीस लड़ाईयाँ भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को काफ़िरों से लड़ना पड़ीं।

बकसरत मोज़ज़ात व ख़वारिक़ आदात का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुहूर हुआ, सबसे बड़ा मोजिज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुर्आन शरीफ़ है जिसमें फ़साहत व बलाग़त का एजाज़ भी है और अख़बार का भी और कुव्वते तासीर और सूरते तासीर का भी।

नुबुवत के बारहवें साल जब कि उम्र शरीफ़ इक्कियावन साल नौ माह की थी हक़ तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेराज अता फ़रमाई यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आसमानों पर बुलाये गये, जन्नत दोज़ख़ की सैर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कराई गई और आलम मलकूत के अजाइब और अल्लाह तआला की आयते कुबरा का मुशाहिदा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कराया गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़लाक़े करीमाना की यह कैफ़ियत थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब में हर शख़्स यह समझता था कि सब से ज़ियादा लुत्फ़ व करम मेरे ऊपर है, हमेशा ग़ुरबा व मसाकीन की तरफ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तवज्जुह ज़ियादा होती थी, यतीमों और बेवाओं का बड़ा ख़याल करते थे, अगर कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब में बीमार होता तो उसकी इयादत को तशरीफ़ ले जाते, जनाज़ों के साथ जाते और नमाज़ पढ़ कर दफ़्न करके वापस आते, किसी की आख़री हालत सुनते तो उसके पास जा कर बैठ जाते, रूऐ अनवर उसकी आँखों के सामने होता ऐसे मरने वालों की ख़ुश क़िस्मती का क्या कहना।

दुन्या का ऐश व आराम कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने नहीं उठाया, मोटे कपड़े पहनते थे और अकसर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में फ़ाक़ा हो जाता था, कभी ऐसा न हुआ कि लगातार दोनों वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाना खाया हो।

अल्लाह तआ़ला ने हुस्ने सूरत भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा अ़ता फरमाया था कि चेहर–ए–मुबारक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चौदहवीं रात से ज़ियादा चमकता था जिस रास्ते से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुज़र जाते देर तक उस रास्ते में ख़ुशबू आया करती, सहाब–ए–किराम उस ख़ुशबू से पहचान लेते।

जब उम्र शरीफ़ तिरसठ बरस की हुई और हिजरत का ग्यारहवां साल शुरुअ़ हुआ तो बारहवीं रबीउल अव्वल को दोशम्बे के दिन बवक़्ते चाश्त चौदा दिन बीमार रह कर इस आलम से रेहलत फ़रमाई और रफ़ीक़े आ़ला जल्ला मजदुहू के जवारे रहमत में सुकूनत इख़्तियार की।

आख़री वसीयत जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को फ़रमाई वह यह थी कि नमाज़ की हिफ़ाज़त करना और अपने लौंडी गुलामों के साथ नेक सुलूक़ करना, हज़रत आइशा रज़ि0 के हुजरे में जिस जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई थी वहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ बनाई गई जो ज़ियारत गाहे आलम है।

(सीरत ख़ुलफ़ा–ए–राशिदनी से ग्रहीत)

❖❖❖

इस्लामिक अर्थव्यवस्था.....

चुनांचे मैं अर्थशास्त्र के महत्व को समझता हूँ और उसके मसायल और उपायों पर अच्छे से अच्छे तरीक़े पर ग़ौर करने का मुख़ालिफ़ नहीं हूँ, और उसकी फ़िक्र ज़रूरी समझता हूँ, लेकिन इस्लामी सिद्धान्त को नज़र अन्दाज़ किये बग़ैर, जिसमें व्यापार और सूद को गड मड किया जाता है लिहाज़ा अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ, इस्लाम की महब्बत में और कुरआनी आदेश को अहमियत देने में कमी न करें।

❖❖❖

रूह और तक़दीर

–इदारा

रूह की हक़ीक़त अक़्ल नहीं पाती
ग़ौर करती हैरान रह जाती
तक़दीर भी अजब शै है
हर अम्र में है सामने आती
तक़दीर है छुपी रहती
अमल तक़दीर है कराती
दुआएं ख़ूब ख़ूब करो
दुआ रायगाँ नहीं जाती
इंसान की सहीह कोशिश
सिला ज़रूर है पाती
तौबा हज़ार बार किया
सुकूं तबियत क्यों नहीं पाती
ला तक़नतू जब तुम ने पढ़ा
नज़र में रहमत क्यों नहीं आती
निदा आई उम्मीद रख अच्छी
रूह फिर झूम क्यों नही जाती
हज़ारों सलाम नबीये रहमत पर
काश यह आवाज़ अर्श तक जाती
उनकी आल और उनके अस्हाब पर
रहमते रब रहे आती

❖❖❖

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा ख़दीजतुल कुबरा रज़ि0

–मौलाना मुहम्मद तारिक़ नौमान

–हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

तारीख़ का रुख़ बदलने में जिन महिलाओं ने अहम किरदार अन्जाम दिया है, उनमें सरे फहरिस्त और सुनहरी हुरुफ़ से लिखा गया मुक़द्दस नाम उम्मुल मोमिनीन सय्यदा खदीजतुल कुबरा (रज़ि0) का है अरब की मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन और दौलत मन्द खातून होने के साथ–साथ इल्मो फ़ज़्ल और ईमान व यक़ीन में भी नुमायां मुकाम रखती थीं।

शजरह–ए–नसबः–

सय्यदा खदीजा रज़ि0 बिन्ते ख़ुवैलिद बिन असद बिन अब्दुल उज्जा बिन कुसै बिन किलाब बिन मुर्ररह बिन क़अब बिन लुवै आप रज़ि0 का नसब नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नसब से कुसै में मिल जाता है, आप की कुन्नियत उम्मे हिन्द है, आपकी वालदा फ़ातिमा बिन्ते ज़ाइदा थीं वह क़बीला बनी आ़मिर बिन लुवै से थीं।

अफ़ज़ल तरीन जन्नती औरतों में शुमारः–

मुसनद इमाम अहमद में सय्यदना इब्ने अब्बास रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– जन्नती औरतों में सबसे अफ़ज़ल सय्यदा ख़दीजा रज़ि0 सय्यदा फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद रज़ि0, हज़रत मरियम बिन्ते इमरान रज़ि0 और आसिया बिन्ते मजाहम रज़ि0।

सय्यदा की तिजारत में दो गुना नफ़ाः–

नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अच्छे अख़्लाक़ का हर जगह चर्चा था हत्ता की मुश्रिकीने मक्का भी उन्हें, अल अमीन, वस्सादिक़, से याद करते, आप रज़ि0 ने अपने कारोबार के लिए यकताए रोज़गार को मुन्तखब फरमाया और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में पैग़ाम पहुँचाया कि आप सय्यदा ख़दीजतुल कुबरा का माले तिजारत ले कर शाम जाएं और मुनाफ़े में जो मुनासिब ख़्याल फरमाएं ले लें। हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पेशकश को बमशवरह अबू तालिब कुबूल फरमा लिया, सय्यदा रज़ि0 ने अपने गुलाम में सरह को ख़िदमत के लिए हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कर दिया।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना माल बसरा में बेच करके दो गुना नफा हासिल किया, और क़ाफिले वालों को भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत व बरकत से बहुत नफ़ा हुआ जब क़ाफिला वापस हुआ तो सय्यदा रज़ि0 ने देखा कि दो फरिशते रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर साया किये हुए हैं और दौराने सफर के ख़ुराक़ ने सय्यदा रज़ि0 को आपका गरवीदह कर दिया।

सय्यदा ख़दीजतुल कुबरा का निकाहः–

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा ख़दीजतुल कुबरा मालदार होने के अलावा फराख़ दिल और कुरैश की औरतों में अशरफ़ थीं, बकसरत कुरैशी आप रज़ि0 से निकाह के ख़ाहिशमंद थे लेकिन

आप रज़ि0 ने किसी के पैग़ाम को कबूल न फरमाया जब सय्यदा रज़ि0 ने सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में निकाह का पैग़ाम भेजा और अपने चचा उमर बिन असद को बुलाया, सरदारे दो आ़लम भी अपने चचा अबू तालिब, हज़रत हमज़ा रज़ि0, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 और दीगर सरदारों के साथ सय्यदा ख़दीजा रज़ि0 के मकान पर तशरीफ़ लाए, अबू तालिब ने निकाह का ख़ुतबा पढ़ा, एक रिवायत के मुताबिक़ सय्यदा रज़ि0 का महर साढ़े बारह औक़िया सोना था बवक़्ते निकाह सय्यदा रज़ि0 की उम्र चालीस बरस और आक़ाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उमर शरीफ़ पच्चीस बरस थी। जब तक आप रज़ि0 हयात रहीं, आपकी मौजूदगी में प्यारे आक़ा ने किसी औरत से निकाह न फरमाया।

ग़म गुसार बीवीः—

ग़ारे हिरा में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बारगाहे रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में वही लेकर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया पढ़िये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं नहीं पढ़ सकता, उसके बाद जिब्राईल अलै0 ने अपनी आग़ोश में लेकर भीन्चा फिर छोड़ कर दोबारा कहा पढ़िये, मैंने कहा मैं नहीं पढ़ सकता जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने भींचा फिर छोड़ कर कहा पढ़िये।

इस वाक़िए से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीअ़त बेहद मुतस्सिर हुई घर वापसी पर सय्यदा रज़ि0 से फरमाया मुझे कम्मबल उढ़ाओ मुझे कम्मबल उढ़ाओ सय्यदा रज़ि0 ने आपके जिस्म अनवर पर कम्बल डाला और चेहरे अनवर पर छींटे दिये ताकि डर की कैफियत दूर हो, फिर आपने सय्यदा रज़ि0 से सारा हाल बयान किया, सय्यदा रज़ि0 ने आपको तसल्ली देते हुए फरमाया कि अल्लाह तआ़ला आपके साथ अच्छा मुआमला ही फरमायेगा क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहम फरमाते हैं, अ़याल का बोझ उठाते हैं, रियाज़त व मुजाहदा करते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं, बेकसों और मजबूरों की दस्तगीरी करते हैं, मोहताजों और ग़रीबों के साथ भलाई करते हैं, लोगों के साथ हुस्न अख़्लाक़ से पेश आते हैं, लोगों की सच्चाई में उनकी मदद और उनकी बुराई से दूरी इख्तियार फ़रमाते हैं, यतीमों को पनाह देते हैं, सच बोलते हैं, और अमानतें अदा फरमाते हैं, सय्यदा रज़ि0 ने इन बातों से आपको तसल्ली दी कुफ़्फार कुरैश की तकज़ीब से रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो ग़म उठाते थे वह ग़म सय्यदा रज़ि0 को देखते ही जाता रहता था और आप ख़ुश हो जाते थे और जब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाते तो वह आपकी ख़ातिर मदारात फरमातीं जिससे हर मुश्किल आसान हो जाती।

साबिकुल ईमानः—

जमहूर के मस्लक पर सबसे पहले अललऐलान ईमान लाने वाली हज़रत सय्यदा रज़ि0 हैं क्योंकि जब सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ग़ारे हिरा से तशरीफ़ लाये और उनको नजूले वही की ख़बर दी तो वह ईमान लाईं। बअ़ज़ कहते हैं कि उनके बाद सबसे पहले सय्यदुना अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ईमान लाये, बअ़ज़ कहते हैं सबसे पहले सय्यदुना हज़रत अली रज़ि0 ईमान लाये उस वक़्त आप रज़ि0 की उमर शरीफ़ दस साल थी, शेख इब्नुस्सलाह फरमाते हैं कि सबसे ज़ियादा मोहतात और मुनासिब बात यह है कि आज़ाद मर्दों में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 बच्चों और नौ उमरों में हज़रत अ़ली रज़ि0, औरतों में सय्यदा ख़दीजा रज़ि0 और आज़ाद किये हुए गुलामों में ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 और गुलामों में से हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि0 ईमान लाये।

सय्यदा ख़दीजा की फ़राख़ दिलीः–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि0 से फरमाया अल्लाह की क़सम ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली जब सब लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया उस वक़्त वह मुझ पर ईमान लाईं और जब सब लोग मुझे झुठला रहे थे उस वक़्त उन्होंने मेरी तस्दीक़ की और जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने के लिए तैयार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा सामान दे दिया और उन्हीं से अल्लाह तआ़ला ने मुझे औलाद अता फरमाई।

औलाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमः–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम औलाद सय्यदा ख़दीजा रज़ि0 के बतन से हुईं, सिर्फ हज़रत इब्राहीम रज़ि0 के जो सय्यद मारिया क़िब्तिया रज़ि0 से पैदा हुए, बेटों में हज़रत क़ासिम रज़ि0 और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 के अस्माए ग्रामी मरवी हैं जब कि बेटियों में सय्यदा ज़ैनब, सय्यदा रुक़य्या, सय्यदा उम्मे कुलसूम, और सय्यदा फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि0 हैं।

आपके विसाल के बाद ज़िक्रे ख़ैरः–

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फरमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा रज़ि0 का अकसर ज़िक्र फरमाते रहते थे, बाज मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बकरी ज़ब्ह फरमाते और फिर उसके गोश्त के टुकड़े करके हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की सहेलियों के घर भेजते सिर्फ इसलिए कि ये हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की सहेलियाँ थीं।

उम्मुल मोमिनीन का विसालः–

आप रज़ि0 तक़रीबन पच्चीस साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीक़े हयात रहीं, आप रज़ि0 का विसाल बेअ़सत के दसवें साल माहे रमज़ान में हुआ, और मक़बरह हुजून में मदफून हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप रज़ि0 की क़ब्र में दाख़िल हुए और दुआ–ए–ख़ैर फरमाई, नमाज़े जनाज़ा उस वक़्त तक मशरुऊ न हुई थी, इस सान्हा पर रहमते आलम बहुत ज़ियादा मलूल व महजून हुए।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक ____________ ________ تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़ितमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के जुमले पढिये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

۱۔ کر جوانی میں عبادت کاہلی اچھی نہیں۔

۲۔ جب بڑھاپا آ گیا کچھ بات بن پڑتی نہیں۔

۳۔ ہاتھ میں اور پاؤں میں وہ زور وہ قوت کہاں۔

۴۔ نطق میں وہ بات بینائی میں وہ طاقت کہاں۔

۵۔ ہے بڑھاپا بھی غنیمت گر جوانی ہو چکی۔

۶۔ یہ بڑھاپا بھی نہ ہوگا موت جس دم آ گئی۔

۷۔ جو گیا دنیا سے وہ تو یاں نہیں آنے کو پھر۔

۸۔ پنج روزہ زندگی کوئی نہیں پانے کو پھر۔

۹۔ آخرت کی فکر کر لے عقل رکھتا ہے اگر۔

۱۰۔ نیکیاں دنیا میں کر لے عقل رکھتا ہے اگر۔

1. कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं।
2. जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं।
3. हाथ में और पाँव में वह ज़ोर वह कुव्वत कहाँ।
5. है बुढ़ापा भी ग़नीमत गर जवानी हो चुकी।
6. यह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई।
7. जो गया दुन्या से वह तो याँ नहीं आने को फिर।
8. पंज रोज़ा ज़िन्दगी कोई नहीं पाने को फिर।
9. आख़िरत की फिक्र कर ले अक़्ल रखता है अगर।
10. नेकियाँ दुन्या में कर ले अक़्ल रखता है अगर।